RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

आध्यात्म की नई उड़ान...

शिव आमंत्रण

बिहार झारखंड संस्करण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 06 अंक 10 हिन्दी (मासिक) अक्टूबर 2019 सिरोही पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 9.50

02 बीके लक्ष्मी उर्फ मुन्नी के जन्म दिवस पर विशेष

05 मैं और मेरा के अंतर को समझना .....

15 दस बुराईयों पर विजय का प्रतीक....

संस्कारों की नर्सरी: इंदौर का शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास बना मिसाल

आध्यात्म, अनुशासन, साधना और सादगी से तराश रहे बेटियों का व्यक्तित्व और प्रतिभा

- छात्राओं का अनुशासन और आध्यात्म के प्रति लगन देखकर हर कोई रह जाता है अचंभित
- ब्रह्ममुहूर्त में सुबह 4 बजे शुरू से हो जाती है दिनचर्या की शुरुआत
- रोजाना लगती है आध्यात्म की पाठशाला, मेडिटेशन करना जरूरी

इंदौर से बीके पुष्पेन्द्र की विशेष रिपोर्ट...

शिव आमंत्रण इंदौर। ब्रह्ममुहूर्त में सुबह 4 बजे से ध्यान में मग्न छात्राएं। शालीन पहनावा। हर काम अनुशासन और मर्यादा के दायरे में। व्यवस्थित दिनचर्या। सभी पढ़ाई में होशियार। साफ-सफाई के साथ स्वाबलंबी जीवन की झलक। रोजाना आध्यात्मिक सत्संग।

हम बात कर रहे हैं मप्र, इंदौर के शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की। जो अपने बेहतर प्रबंधन और अनुशासन के लिए पूरे देश में मिसाल बना हुआ है। यहां पढ़ाई के साथ आध्यात्म और अनुशासन से बेटियों का भविष्य संवारा जा रहा है। छात्रावास का मुख्य उद्देश्य प्रतिभाओं को निखारने के साथ उन्हें संस्कारित बनाकर स्वर्णिम राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन करना है। वर्ष 1983 में शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की नींव रखी गई। पिछले 36 वर्षों से ये छात्रावास आध्यात्म और अनुशासन के साथ भविष्य की नई पौध तैयार करने में जुटा है। इसमें काफी सफलता भी मिली है। आज छात्रावास से निकलकर 600 से अधिक बेटियां भारत सहित विश्वभर में भारतीय संस्कृति, संस्कार और आध्यात्म की शिक्षा से लोगों को जीवन जीने की कला सिखा रहीं हैं।

बहनें सगी की तरह रखती हैं ख्याल

छात्रावास में कक्षा 6वीं से लेकर स्नातक की तक छात्राओं को रहने की व्यवस्था है। इसमें सबसे खास बात ये है कि छोटी छात्राओं का बड़ी क्लास की छात्राएं प्यार-स्नेह के साथ सगी बहनों से भी बढ़कर ख्याल रखती हैं। फिर बात चाहे पढ़ाई की हो या अन्य मार्गदर्शन की। छात्रावास का माहौल इस तरह का है कि प्रत्येक छात्रा यहां अपने परिवार की तरह रहती है। उन्हें कभी भी अपने माता-पिता की कमी महसूस नहीं होती है।

1983
में शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की स्थापना

150
छात्राएं करती हैं निवास

04
बजे ब्रह्ममुहूर्त से शुरू हो जाती है दिनचर्या

600
से अधिक कन्याएं पढ़कर बनीं ब्रह्माकुमारी

06
वीं से स्नातक की कन्याएं कर रहीं पढ़ाई

दिनचर्या का पालन करना अनिवार्य

छात्रावास में सुबह उठने से लेकर सोने तक की पूरी दिनचर्या विधिवत बनी हुई है। यहां प्रवेश के साथ छात्राओं को इसका पालन करना अनिवार्य है। यहां दिनचर्या की शुरुआत अलसुबह 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त से हो जाती है। सबसे पहले सभी छात्राएं सुबह 4 बजे से 4.30 बजे तक राजयोग मेडिटेशन करती हैं। इसके बाद अपनी पढ़ाई की शुरुआत करती हैं। साथ ही स्वच्छ कपड़े पहनने के साथ साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है।

देशभर से आती हैं बालिकाएं

छात्रावास में न केवल मध्यप्रदेश बल्कि देशभर से छात्राएं यहां पढ़ने के लिए आती हैं। वर्तमान में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, कर्नाटक, उत्तराखंड, झारखंड, त्रिपुरा, नेपाल और बांग्लादेश आदि राज्यों की 150 छात्राएं अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ाई कर रही हैं।

शक्ति निकेतन का उद्देश्य...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इंदौर जोन के पूर्व निदेशक स्व. ओमप्रकाश भाईजी ने श्रेष्ठ एवं स्वर्णिम भारत के निर्माण में नारी शक्ति की भूमिका को प्रतिस्थापित करने एवं नव पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण करने के उद्देश्य इस इसकी स्थापना की थी। आपका मानना था कि यदि बच्चों को बचपन से ही पढ़ाई के साथ आध्यात्म, अनुशासन और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए तो श्रेष्ठ व स्वर्णिम भारत की स्थापना की जा सकती है। बचपन से ही बालिकाओं के नैतिक व चारित्रिक विकास पर ध्यान देकर उन्हें चरित्रवान बनाना।

बालिकाएं खुद करती हैं निजी काम

छात्रावास में प्रवेश के साथ ही बालिकाओं को स्वाबलंबी जीवन की शिक्षा दी जाती है। यही कारण है कि यहां बालिकाएं दैनिक जीवन के कार्य जैसे- रूम की सफाई, अपने कपड़ों की धुलाई, बर्तन साफ करना और अपने व्यक्तिगत कार्य स्वयं करना सिखाया जाता है। इससे जहां उनकी शारीरिक क्षमता का विकास होता है, वहीं आत्मविश्वास भी बढ़ता है। साथ ही व्यस्त दिनचर्या के कारण व्यर्थ की बातों व व्यर्थ चिंतन को समय नहीं मिल पाता है।

विस्तृत पेज 10 पर....

बच्चों में संस्करों के सृजन से होगा स्वर्णिम राष्ट्र का निर्माण

बालक-बालिकाओं में बचपन से ही श्रेष्ठ संस्कारों के सृजन से स्वर्णिम और सुखद राष्ट्र का निर्माण संभव है। जब तक भविष्य के नौनिहालों में संस्कारों का बीजारोपण नहीं होगा, एक अच्छे चरित्रवान और श्रेष्ठ नागरिक की कल्पना नहीं की जा सकती है। इसी उद्देश्य को लेकर वर्ष 1983 से शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की स्थापना की गई। यहां बेटियों को पढ़ाई के साथ आध्यात्म, अनुशासन और साधना की शिक्षा सादगी के साथ दी जाती है, ताकि वह जीवन जिस क्षेत्र में रहें अपने संस्कारों की सुगंध से सभी को आलोकित करतीं रहें। आज यहां से शिक्षा लेकर हजारों कन्याओं का जीवन संवरा है। यह देखकर खुशी होती है।

बीके करुणा, डायरेक्टर, शक्ति निकेतन दिव्य जीवन कन्या छात्रावास, इंदौर

यहां महसूस नहीं हुई परिवार की कमी

10वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद 11वीं कक्षा में इंदौर छात्रावास में रहने का गोल्डन चांस मिला। मुझे कोई भी काम करना नहीं आता था। यहां तक कि बाल बनाना भी नहीं आता था। हॉस्टल में आकर, यहां के श्रेष्ठ संग में रहकर मैंने ज्ञान की सही समझ जानी। हर प्रकार के घरेलू और बाहरी काम करने की कला सीखी। हॉस्टल में दुनिया के नकारात्मक वातावरण से सुरक्षित रही। यहां के वातावरण से आध्यात्म के प्रति लगन बढ़ती गई। नियमित योग साधना से जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हुआ। वर्ष 2009 में विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन सेवा में समर्पित कर दिया। दो साल से नैरोबी, केन्या में भारतीय संस्कृति आध्यात्म का संदेश जन-जन को दे रही हूं।

बीके अंजली, मोटिवेशनल स्पीकर व राजयोग शिक्षिका, नैरोबी, केन्या (पूर्व छात्रा)

यहां रहकर हर कला सीखी

इंदौर हॉस्टल में कक्षा 6वीं से लेकर के 12वीं तक पढ़ाई की। हम तीन बहनें हैं और सभी ने एक साथ छात्रावास में रहकर पढ़ाई पूरी की। मैंने छात्रावास में रहकर बहुत कुछ सीखा। वह मेरा घर ही था। माता-पिता के पास तो मैं न के बराबर थी। लेकिन पूरी पालना, स्थूल पालना, सूक्ष्म पालना मुझे छात्रावास में मिली। यहां जो हमें निःस्वार्थ प्यार मिला उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। हम कैसे भी हों, कितनी भी कमजोरियां हों और बचपना हो, जिद्द का संस्कार हो लेकिन दीदी हमें आगे बढ़ने में बहुत मदद करती हैं। उन्होंने हमें इस अच्छे मार्ग पर चलना सिखाया। अपने जीवन को कैसे अच्छा बनाएं, कैसे हम अपने आप को सेफ रखें आदि बातें सिखाई। जब भी कोई मुझसे पूछता है आप कहां से हो तो मैं कहती हूं कि इंदौर से हूं। छात्रावास में मेरी बचपन की यादें जुड़ी हुई हैं। हर पल, हर चीज जो मैंने सीखी, जो प्राप्त किया वो यहीं की देन है। यहां से जाना कि भगवान क्या है? भगवान का कार्य क्या है और मुझे क्या करना है? यहां दीदियों का शुक्रिया कैसे अदा करुं जो उन्होंने हमें इतनी धैर्यता सिखाई।

बीके रुक्मिणी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, बेहरीन (पूर्व छात्रा)

मैं पहली बार 1967 में ब्रह्मा बाबा से मिलने माउण्ट आबू आई। बाबा के कमरे में झांकी तभी बाबा ने बुला कर गोद में बिठा लिया। गोद में बिठाकर बाबा ने बहुत प्यार किया। मैं तो पहले से ही बहुत सुखी संपन्न परिवार से थी ही। तभी बाबा ने पूछा बच्ची कितना पढ़ी हो आगे कितना पढ़ोगी।

स्कूल के मॉनिटर से ईश्वरीय प्रबंधन की

सुपर कम्प्यूटर का नाम है बीके लक्ष्मी

मीरा की तरह ईश्वर के प्रेम में डूबी सभी गुणों से सुसज्जित जीवन के सत्तर साल

जन्म दिन विशेष
15 अक्टूबर 1950

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड। जीवन के सत्तर साल एक लंबा वक्त होता है। उसमें जीवन के वे सभी यादें समाई होती हैं जो जीवन के बेहतरीन पलों में शुमार की जाती हैं। बचपन से लेकर युवावस्था और फिर प्रौढ़ावस्था। जीवन के ये सभी पड़ाव यदि यादगार पलों में शामिल हो तो इससे सुन्दर और क्या हो सकता है। ऐसा ही कुछ जीवन था ब्रह्माकुमारीज संस्थान की कार्यक्रम प्रबन्धिका बीके लक्ष्मी उर्फ बीके मुन्नी का। जिनके जीवन के तो सत्तर वर्ष हो गए लेकिन आध्यात्मिक पथ की राही भी अपने गोल्डन जुबली मना रही हैं। शिव आमंत्रण के संपादक बीके कोमल से विशेष चर्चा में उन्होंने अपने जीवन के अनछुए पहलूओं को उजागर किया, प्रस्तुत है विशेष साक्षात्कार....

पवित्र जीवन का बीज बचपन से ही

देश का सबसे बड़ा औद्योगिक शहर कोलकाता आर्थिक के साथ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। भीड़भाड़ और अपने जीवन की यात्रा में दो रोटी का जुगाड़ करने के लिए लोग कोलकाता का रूख करते हैं। मां दुर्गा की भक्ति में लीन इस शहर की अपनी विशेषता है। इसी शहर में बीके मुन्नी का जन्म एक धार्मिक पारायण परिवार में 15 अक्टूबर 1950 को हुआ। पांच वर्ष की आयु में ही मां का साथ छूट गया और ममता का साया सर से उठ गया। इसके बाद पिता की दूसरी शादी हुई जिससे जिससे छह-भाई बहनों में सबसे बड़ी होने के नाते मुझसे सबका बहुत लगाव और प्यार था। मैं बचपन से ही पवित्र जीना चाहती थी। सन्यासी बनकर घर में रहना चाहती थी। मेरी इच्छा ही नहीं थी कि मैं अपने परिवार से दूर जाऊं। इसलिए शादी का इरादा दूर-दूर तक नहीं था।

चाहत थी डॉक्टर और इंजीनियर बनने की

बीके मुन्नी पढ़ाई में बहुत ही होशियार थी। इसलिए वे लंबे समय तक कई क्लास में मॉनीटर रही। क्लास में हमेशा प्रथम आती थीं। बचपन में इच्छा थी कि पढ़ाई करके डॉक्टर या इंजीनियर बनकर परिवार में ही रहकर सबकी सेवा करुं। ऐसा करने का ख्याल बाल्यकाल से ही आने लगा था। उन्होंने कहा कि मुझे अकेले में रहना पसन्द ही नहीं था, इसलिए संयुक्त परिवार में रहना चाहती थी।

> मां दुर्गा की भक्ति में लीन शहर कोलकाता में बीके मुन्नी का जन्म एक धार्मिक पारायण परिवार में 15 अक्टूबर 1950 को हुआ।

जन्म के साथ ही परिवार में आई दौलत और शोहरत

कहते हैं कि जन्म लेने वाले अपने साथ अगले और पिछले जन्मों की उपलब्धियां लेकर आता है। ऐसा ही कुछ था बीके लक्ष्मी के साथ। बीके लक्ष्मी के पिता हिन्द मोटर्स में उन दिनों मैनेजर हुआ करते थे। लेकिन जैसे ही लक्ष्मी का जन्म हुआ पूरे परिवार में एक नया सूर्योदय हुआ। हिन्द मोटर्स से मैनेजेर की नौकरी छोड़ लोहे का कारोबार प्रारम्भ हुआ और देखते ही देखते यह कारोबार बड़ा होता गया और शहर के सुप्रसिद्ध व्यवासयी बन गए। इसके बाद ही उनके पिता ने नाम लक्ष्मी रखा।

लाल रोशनी ने बदला जीवन का मुकाम

चर्चा में बीके मुन्नी ने बताया कि एक दिन मैं पिता के साथ सेंटर पर पहुंची तो वहां का सुंदर वातावरण देखकर मुग्ध हो गई। तभी लाल बत्ती जलाकर मुझे योग में बिठाया गया। उस समय ऐसी अनुभूति हुई कि जिसे मैं ढूंढ रही थी वो यही दुनिया है। अब यही मेरा घर है यही मेरी दुनिया है। फिर मैं निर्मल शांता दादी से मिली उन्होंने मुझे इतना प्यार दिया जो लगा मेरा यही घर है।

मैं पहली बार 1967 में ब्रह्मा बाबा से मिलने माउण्ट आबू आई। बाबा के कमरे में झांकी, तभी बाबा ने बुला कर गोद में बिठा लिया। गोद में बिठाकर बाबा ने बहुत प्यार किया। मैं तो पहले बहुत सुखी संपन्न परिवार से तो थी ही। तभी बाबा ने पूछा बच्ची कितना पढ़ी हो आगे कितना पढ़ोगी। इस तरह बाबा ने मुझसे बात किया कि मैं सोच में पड़ गई कि ये कौन हैं जो मेरे मन की बात कर रहे हैं। मैंने कहा इतना पढ़ी हूं कि आपकी सेवा कर सकती हूं और मुझे कुछ नहीं करना। फिर मेरा मन पढ़ाई से ऊबने लगा।

फिर बदल गया कपड़े का अंदाज

बाबा से मिलने के बाद मैंने कहा कि बाबा इग्जाम देकर मैं फिर सेवा में आ जाऊंगी। फिर घर जाकर सफेद रंग के कपड़े पहनने प्रारम्भ कर दिए। यह मेरे चाचा को अच्छा नहीं लगा और वे जल्दी शादी कर देना चाहते थे। उसके बाद मैं साकार बाबा के पास 1968 में आई। प्रतिदिन मैं एक टाइम बाबा के साथ भोजन करती थी। 17 दिन रहने के बाद मेरे घर जाने का समय आ गया और फिर बाबा ने बोला बच्ची घर छोड़कर क्यों जा रही हो। मैंने कहा एक बार जा रही हूं फिर हमेशा के लिए आऊंगी।

भंडारा संभालने का वरदान

जब मैं जाने लगी तो बाबा ने कहा कि सौगात लो मैंने मना किया तो बाबा ने कहा बाबा के घर से खाली नहीं जाते। फिर बाबा ने मुझे लच्छू दादी के साथ स्टॉक में भेजा और कहा जो चाहिए ले लो। मैं गई और सिर्फ एक रूमाल लेकर आई। फिर बाबा ने प्यार से गले लगाया। बाबा ने कहा बच्ची मधुबन में बाबा का भंडारा संभालेगी।

लौकिक पिता से मिली अलौकिक विरासत

मुझे ईश्वरीय ज्ञान भी पिताजी के द्वारा ही मिला। जब मैं छोटी थी तब हमारे पिताजी अपने दोस्त के घर जाते थे जो ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हुए थे उन्होंने ही मेरे पिता जी को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के बारे में बताया था। जब मेरे पिता सेवाकेन्द्र पर जाने लगे तो उन्होंने तत्कालीन सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके भारती बहन (जो इस समय राजकोट में हैं) को मेरी विशेषताओं को बताते हुए कहा कि वह शादी नहीं करना चाहती और सन्यासी बनना चाहती है। तब भारती दीदी के कहने पर पिताजी सेवाकेन्द्र ले गए। उस समय मैं नौवीं क्लास में पढ़ती थी और मेरी उम्र सोलह साल थी।

.....शेष पेज 7 पर

कागज और कलम ही हमारा कम्प्यूटर

बी के मुन्नी बहन 70 वर्ष की उम्र में भी मस्तिष्क के मामले में एकदम यंग हैं। उन्हें कम्प्यूटर का ज्ञान नही है लेकिन सब चीजें जबानी याद रहती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड में रहकर पूरे कार्यक्रमों का संचालन करती हैं। राजयोग ध्यान और अध्यात्म की शक्ति से सुपर कम्प्यूटर की तरह काम करती हैं। आज भी वे 20 घंटे तक काम करने की क्षमता रखती हैं। एक कागज और कलम से पूरे प्रबंधन को मैनेज करती हैं।

दादी की लवली बेबी बोल ने लाया नजदीक

दादी की मूरत मां जैसी थी। दादी प्रतिदिन हमें रात को गोद में लेकर मुरली खुद पढ़ती और मुझे भी सुनाती थीं। कभी भी यदि कोई गलती हो जाती थी दादी ने कभी डांटा नहीं । जब कोई गलती दादी के सामने हो जाती थी तो दादी कहती थी मुन्नी ऐसे नहीं यह काम ऐसे होगा। उनका बोलने का ढंग यही था। 18 वर्ष की उम्र में रहने लगी है अभी 50 साल पूरा हो गया। दादी इतना प्यार करती थी कि मैं ज्यादा समय उनके साथ ही बिताना चाहती थी।

झालावाड़ जिला जेल में 2017 से कैदियों की बदली जिंदगी

आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक योग से बंदियों का बदला जीवन

झालावाड़ जेल में बंदी योग ध्यान करते हुए। ये सिलसिला अलसुबह से ही शुरू हो जाता है। इससे कई बंदी पूरी तरह बदल गए हैं।

महिला बंदियों की दिनचर्या में राजयोग अभ्यास के साथ शारीरिक योग शामिल हो गया है।

जेल से जन्नत की ओर

सकारात्मकता अपनाने से बदल रहा जेल का माहौल

शिव आमंत्रण ❯ झालावाड़/राजस्थान। अपराध का मूल कारण नकारात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा को समाप्त करने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अहम भूमिका अदा कर रही है। राजस्थान के झालावाड़ कारागृह में कैदियों के व्यवहार में महत्वपूर्ण सुधार लाने का श्रेय ब्रह्माकुमारीज़ को दिया जाता है।

इस जेल में ज्ञान योग सेवा की शुरुआत 2017 में रक्षाबंधन के दिन हुई। वर्तमान समय में 50 से 60 बंदी रोजाना योग एवं ध्यान लगाने के साथ परमात्म महावाक्य (मुरली) भी सुनते हैं। पिछले दो वर्षों में अब तक कई बंदियों का जीवन परिवर्तन हो चुका है। सेवाकेंद्र की तरह ही जेल के अंदर प्रदर्शनी पोस्टर, मेडिटेशन चित्र, प्रेरणादायी स्लोगन आदि जेल बैरक में दिखाई देते हैं। जहां इन बंदियों के चेहरे पर पहले आत्मग्लानि और पश्चाताप के भाव रहते थे वहीं अब आत्म संतुष्टि और आत्म सम्मान साफ देखा जा सकता है।

कई कैदियों के जीवन परिवर्तित होते देख उनके साथी भी इस पावन पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। ताकि जेल को जल्द से जल्द सकारात्मक वृत्ति की उत्पन्न स्थली बनाया जाए।

बंदी बोले परमात्मा ने हर ली सारी पीड़ा

जेल के अंदर ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा बताया जाता है कि तुम इस शरीर को चलाने वाली दिव्य प्रकाश स्वरूप चैतन्य आत्मा हो। यह शरीर नश्वर है। परमात्म ज्ञान मिलने के बाद कई कैदी अब प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करते हैं। उनका मानना है कि परमात्मा ने हमारी सारी पीड़ाएं हर ली हैं। इस ईश्वरीय कार्य में तन-मन-धन से समर्पित करने के लिए तैयार हूं।

2017
से जेल में ईश्वरीय सेवाओं का अगाज हुआ

50-60
कैदी रोजाना सुनते हैं परमात्म महावाक्य (मुरली)

25-30
महिला कैदी भी अपने वार्ड में होती है शरीक

5-10
बंदी जेल से छूटकर आज भी चल रहे हैं आध्यात्म की राह पर

बंदियों के व्यवहार में आया आश्चर्यजनक बदलाव

मैं जहां भी जाता हूं सभी जगह बहनें जेल में आकर निस्वार्थ रूप से अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं और बंदियों को सुधारने की पूर्ण कोशिश करती हैं। इनका कार्य बहुत ही सराहनीय है। यहां पर समय-समय पर नशा मुक्ति कार्यक्रम होते हैं। ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रयास से बंदियों के व्यवहार में काफी परिवर्तन आया है। अगर इस तरह जागरूकता का कार्यक्रम समाज में चलता रहे तो एक दिन दुनिया अपराधमुक्त होकर स्वर्ग बन जाएगी। इन बहनों के कार्य को नमन करता हूं।

राजपाल सिंह,
जेल अधीक्षक, जिला कारागृह, झालावाड़ , राजस्थान

बंदियों के चेहरे पर मुस्कान देख खुशी मिली

जेल में जब सेवाएं शुरू की तो 7 दिन की कोर्स में ही कैदियों में काफी परिवर्तन दिखाई दिया। उनकी मानसिक स्थिति ठीक रहने लगी। जो भी बंदी भाई जेल से छूट कर बाहर आते तो पहले सेवाकेंद्र आते हैं और बहनों से मिलते हैं। उन्हें बहुत खुशी होती है। जब कैदियों को ज्ञान दिया तो उनके चेहरे पर मुस्कान देख कर बहुत अच्छा लगा। अब तो सभी आपस में भाईचारे से रहते हुए परमात्मा का ज्ञान सुनते हैं और योग-ध्यान भी लगाते हैं।

बीके नेहा, सेवाकेन्द्र प्रभारी, झालावाड़

बंदी अपनी समस्याओं का समाधान पाकर हुए खुश

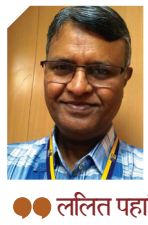

प्रत्येक शनिवार को मुझे ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) सुनाने का मौका मिला। कैदियों को मुरली महावाक्य सुनाने का अनुभव अविस्मरणीय रहा। कई कैदी परमात्मा का परिचय पाकर भावविभोर हो गए। उन्होंने मुरली बहुत ध्यान से सुनी और वे व्यर्थ बातें छोड़कर ज्ञान का मनन-चिंतन कर व्यस्त रहते हैं। बंदी अपनी समस्याओं का समाधान पाकर संतुष्ट हुए।

ललित पहाड़िया, सेवाधारी , ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र, झालावाड़, राजस्थान

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं को शक्ति समझकर खुश रहो और खुशी बांटो तो सारी समस्याएं खत्म हो जाती है

शिव आमंत्रण ❯ आबू रोड। स्वयं को शक्ति समझो तो परीक्षायें खत्म हो जाती हैं, जो संकल्प रखो वह साकार रूप हो जाता है। आदि में भी मन्मनाभव, मध्य में भी यही और अन्त में भी मन्मनाभव। तो आत्म-अभिमानी स्थिति में रहने से मन्मनाभव रह सकते हैं। फिर ड्रामा पर अडोल रह सकते हैं। हर सीन ड्रामा की पास होती जा रही है। उसको जानते तो हैं लेकिन देखकर और आगे क्या होने वाला है, उसके लिए तैयारी करने के लिए बुद्धि को समझ मिली है। विनाश आये घबराने वाले नहीं हैं। पहले से ही तैयारी है। जरा सा भी कहाँ लगाव होगा तो घबराहट जरूर आयेंगी। बिल्ली के पूंगरों को सेक नहीं आया क्यों? बहुतकाल से अपने को भगवान का बच्चा समझा, अगर नहीं समझा तो सेक आयेगा। दूसरों को भी महसूस हो कि इनको होने से हम बचे गये। आगे चलकर कईयों को साक्षात्कार होगा कि विनाश की ऐसी हालतों में बचाने वाले भगवान और भगवान के बच्चे। भगवान के बच्चे बनने से हम दूसरों को बचाने वाले बन गये। अभी हमको क्या सेवा करनी है? कोर्स देना, प्रदर्शनी समझाना.. वह सेवा तो करते आ रहे हैं। अभी सेवा करनी है लाइट हाउस होकर रहने की, शिक्षाओं का स्वरूप होकर स्मृति में रहने की। सिमरण आत्मा को शुद्ध बनाता है।

ज्ञान से प्रेम का स्वरूप दिखाई देता है। बाबा ने जो कहा ममा की बुद्धि ने माना। माननीय क्वालिटी वही बनता है जो स्वमान में रहता है, किसी का अपमान नहीं करता, सबको मान देता है। यह सब तब होगा जब ज्ञान का सिमरण होगा। व्यर्थ चिंतन करने से बुद्धि स्वच्छ होकर माननीय क्वालिटी नहीं बनती है। स्वमान में रहे और दूसरों को स्वमान दिलावे। वह अपमान करे मैं स्वमान याद दिलाऊं, ऐसी क्वालिटी तभी बनेगी जब पहले मैं अन्दर से स्व-स्थिति बनाकर स्वमान में रहूं, बाबा को साथी बनाकर रखूं तो बाबा हमारा मान शान और आगे बढ़ायेगा। कितनी भी परेशान करने वाली बातों में परेशान नहीं होंगे। फिर हमारी बात भी सब मानेंगे। हमारी ऐसी क्वालिटी बाबा ने बनाई, स्मृति दिलाई, आत्मा शुद्ध हो गई, खाद निकल गई, आत्मा सतोप्रधान बनी, लायक बनी, सर्विसएबुल बनी तो बाबा के दिल के अन्दर हमारे लिए मान रहा, बाबा ने हमको ऐसा क्वालिटी वाला बनाया फिर जो आत्मा सामने आयेगी, वह हर बात मानेगी। यह है अपने आपको पढ़ाना। सच्चाई सफाई से आत्मा सहज ही स्वीकार कर लेती है। अच्छि बात स्वीकार करने के लिए दिल खुली है तो सामने वाली आत्मा भी स्वीकार कर लेती है। जैसे सवेरा होते ही चेंज हो जाता है, नुमाशाम होते ही वातावरण चेंज हो जाता है। ऐसे हमारी जैसी वृत्ति है, स्मृति है वह वातावरण हो जाता है। तो सदा खुश रहना और खुशी बांटना यह है- 'सच्ची सेवा'।

खुश रहो और खुशी बांटो, कैसे बांटेंगे? वृत्ती और वायब्रेशन से। दूर बैठे भी कोई यार करे तो खुश हो जाए। सामने भले ही न हो। जैसे कोई इन्सान याद करता है, तो चेहरे पर आता है। जिससे दुःख मिला होगा। तो वह याद आते ही दुःख आ जायेगा। जहां खुशी मिली है, उसे याद किया तो खुशी आ गई। तो सेवा क्या है? खुशी देना।

उत्साह में रहो और उल्लास दिलाओ

हमेशा ऐसा अच्छा क्वालिटी का पुरूषार्थ करें जो पांव पर खड़े रहें। ज्ञान योग के पंख मजबूत हो। ज्ञान है, सिमरण करने के लिए, योग है, शक्ति खिंचने के लिए जिससे पंख मजबूत हो जाते हैं। संगठन से वायब्रेशन जल्दी-जल्दी उड़ते हैं, मदद करते हैं लेकिन उड़ना हर एक को स्वयं है। उत्साह में रहो और उल्लास दिलाओ।

उत्साह वही दिला सकता है जो खुद उड़ता है। संगीत बजता है तो पांव नाचता है। उत्साह में रहना यह बहुत बड़ी सेवा है। कोई कुछ करे और आप उसका उत्साह खत्म करो तो यह डिससर्विस है। तो सेवाधारी हमें कैसा बनना है? आप समान तभी बना सके जब फालतू बातें न करें। नहीं तो आपस में मित्र बनते तो अच्छि बात भी करेंगे तो फालतू भी करेंगे। वह ऊंच पद नहीं पायेंगे। तो आप समान बनाओं जो पूरा ज्ञानी योगी चारों सब्जेक्ट में अच्छा बन जाए। फालतू बातों में आप समान बनाया, यज्ञ की ग्लानी बुद्धि में बिठाई तो वह आप समान नहीं बना सकता, वह ऊंच पद नहीं पा सकता। ऊंच पद पाने के लिए चरित्र बड़ा ऊंचा हो, याद अच्छी हो। - क्रमशः ....

संपादकीय

मन की बुराईयों को भी जलाईये

दशहरा और नवरात्रि तो हम प्रत्येक वर्ष मनाते है परन्तु उसके आध्यात्मिक रहस्यों से अनजान होने के कारण जीवन में उतार नहीं पाते हैं। प्रति वर्ष रावण का बड़ा पुतला बनाते है और उसे जलाते है। यह मानते कि पुतला जलाने से ही बुराईयां भी जल जाती है। लेकिन ऐसा होता नहीं हैं। क्योंकि जितना हम वर्षों से पुतला जलाते आये उतना ही बुराईयां बढ़ती गयी। हम समझते हैं कि इससे ही हमारे विकार दूर हो जायेंगे। लेकिन कभी हम यह नहीं सोचते कि दिनोदिन हमारे अन्दर विकार बढ़ रहे या कम हो रहे हैं। आज की स्थिति देखकर तो यही लगता है कि समाज में बुराईयों दिनोदिन लगातार बढ़ रही हैं। दशहरा मतलब कोई शरीर धारी नहीं बल्कि पांच विकार मनुष्य के और पांच विकार स्त्री के दोनो को ही मिलाकर दशानन का प्रतीकात्मक रूप बनाया गया है। वास्तव में यह हमारे अन्दर व्याप्त बुराईयों का ही प्रतीक है। इसलिए इसे परमाता की शक्ति से ही बुराई रूपी रावण को अन्तर्मन से जलाने का प्रयास करना चाहिए तब हमेशा के लिए जीवन से बुराईयों को समाप्त कर सकेंगे। यही दशहरा के पर्व का आध्यात्मिक संदेश है। बस जरुरत है कि आज हर कोई राम की भूमिका में रहे और अपने कर्त्तव्यों का पालन करें यही परमात्मा का संदेश है।

परमात्म शिक्षाओं का विद्यार्थी जीवन में महत्त्व

मेरी कलम से

बीके संदीप, व्याख्याता] प्रभू दयाल मेमोरियल विश्वविद्यालय हरियाणा

शिक्षक का दायित्व है कि वह अपने विद्यार्थियों को एक उन्नत दिशा प्रदान करे। कुंहार की भांति कच्ची मिट्टी को एक सुंदर सुराही का रूप प्रदान करें जो स्वयं में शीतल जल रख दूसरों को भी निःस्वार्थ भाव से शीतल जल प्रदान करे। लेकिन आज के दौर में ऐसा निःस्वार्थ भाव से होता नहीं दिख रहा है जिसके वजह से हमारी नई पीढ़ी खास कर नैतिक शिक्षा के साथ और भी शिक्षाएं दिल से धारण नहीं कर पा रही है। हर चीज को दिमाग से धारण किया जा रहा जिससे मशीनी आचरण झलकता हुआ रिश्तों में खटास ला रहा है। ऐसी स्थिति को देखते हुए मुझे ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संपर्क में आया तो वहां की पढ़ाई सुन कर आश्चर्यचकित रह गया। यहां का आध्यात्मिक मेडिटेशन की शिक्षा को पाने के दौरान मुझे पहली बार सृष्टि का असली इतिहास, भूगोल और खगोल से परिचय हुआ। तब से मैं रोज एक लौकिक लेक्चरर होने के नाते मेडिटेशन के अभ्यास के साथ अपने क्लास में प्रवेश करता हूं और अपने विद्यार्थियों को भी अभ्यास के साथ ही एक नया अध्याय शुरू करता हूं। इससे विद्यार्थियों का मन शांत होकर एकाग्र हो जाता है। उस समय उनका मन इधर-उधर भटकने के बजाए पढ़ाये जा रहे विषय पर केंद्रित हो जाता है जिससे बिषय की स्पष्टता भी अनुभव हो जाती है। अक्सर बच्चे मूल्य आधारित शिक्षाओं को उपेक्षा की भाव से देखते हैं जबकि जीवन में मूल्यों का होना अति आवश्यक है। इस आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में परमात्मा अपने भक्तों को बच्चा और विद्यार्थी बनाकर पिता और सदगुरू के रूप में एक सात्विक मूल्यों की शिक्षा निरन्तर प्रदान कर रहे हैं। जिस शिक्षा से सिर्फ एक जन्म ही नहीं बल्कि कई जन्म सुख, शांति, आनंद, प्रेम भरा जिंदगी जीने को मिलेगा। इसलिए वर्तमान में इस परमात्म शिक्षा ओं को हम सबों को अवश्य धारण करना चाहिए जिससे हमारा वर्तमान तो सफल हो ही जाता है साथ ही साथ भविष्य जन्म-जन्म के लिए सपूर्ण खुशहाल हो जाता है। आज की पीढ़ी की उचित परवरिश के लिए हम उनके माता-पिता से भी गुजारिश करेंगे कि वे अपने बच्चों को और खुद को ब्रह्माकुमारीज़ विश्वविद्यालय की परमात्मिक मेडिटेशन शिक्षाओं को जीवन में धारण कर अपने बच्चों को भी इसके लिए प्रेरित करें तभी हमारी आने वाली पीढ़ी का जीवन देव तुल्य स्वर्गीक हो जाएगा। इस तरह हम सदा काल के लिए दुःख-अशांति की पीड़ाओं से मुक्त हो सकेंगे।

बोध कथा जीवन की सीख

सुखी रहने के लिए दूसरों को नहीं, खुद को देखो

पुराने समय की बात है एक गुरुकुल के आचार्य अपने शिष्य की सेवा भावना से बहुत प्रभावित हुए। शिक्षा पूरी होने के बाद शिष्य को विदा करने का समय आया, तब गुरु ने शिष्य को आशीर्वाद के रूप में एक ऐसा दर्पण दिया, जिसमें व्यक्ति के मन के छिपे हुए भाव दिखाई देते थे। शिष्य उस दर्पण को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। शिष्य ने परीक्षा लेने के लिए दर्पण का मुंह सबसे पहले गुरुजी की ओर ही कर दिया। शिष्य ने दर्पण में देखा कि उसके गुरुजी के मन में मोह, अहंकार, क्रोध आदि बुरी बातें हैं। यह देखकर शिष्य को दुख हुआ, क्योंकि वह अपने गुरुजी को सभी बुराइयों से रहित समझता था।

शिष्य दर्पण लेकर गुरुकुल से रवाना हुआ। उसने अपने मित्रों और परिचितों के सामने दर्पण रखकर परीक्षा ली। शिष्य को सभी के मन में कोई न कोई बुराई दिखाई दी। उसने अपने माता-पिता की भी दर्पण से ली। माता-पिता के मन में भी उसे कुछ बुराइयां दिखाई दीं। यह देखकर शिष्य को बहुत दुख हुआ और इसके बाद वह एक बार फिर गुरुकुल पहुंचा। गुरुकुल में शिष्य ने गुरुजी से कहा कि गुरुदेव मैंने इस दर्पण की मदद से देखा कि सभी के मन में कुछ न कुछ बुराई जरूर है। तब गुरुजी ने दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य ने दर्पण में देखा कि उसके मन में भी अहंकार, क्रोध जैसी बुराइयां है।

गुरुजी ने शिष्य को समझाते हुए कहा कि यह दर्पण मैंने तुम्हें अपनी बुराइयां देखकर खुद में सुधार करने के लिए दिया था, दूसरों की बुराइयां देखने के लिए नहीं। जितना समय दूसरों की बुराइयों देखने में लगाया, उतना समय खुद को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व बदल चुका होता। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि हम दूसरों की बुराइयां जानने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं। जबकि खुद को सुधारने के बारे में नहीं सोचते हैं। हमें दूसरों की बुराइयों को नहीं, बल्कि खुद की बुराइयों को खोजकर सुधारना चाहिए। तभी जीवन सुखी हो सकता है।

संदेशः हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि हम दूसरों की बुराइयां जानने में ज्यादा रूचि दिखाते हैं। जबकि खुद को सुधारने के बारे में नहीं सोचते हैं। हमें दूसरों की बुराईयों को नहीं, बल्कि खुद की बुराईयों को खोजकर सुधारना चाहिए। तभी जीवन सुखी हो सकता है।

जीवन में सदा उमंग-उत्साह के लिए श्रेष्ठ लक्ष्य जरूरी

दुःखी रहने से जीवन में सफलता के रास्ते दिखना बंद हो जाते हैं, क्योंकि उस दुःख भरी परिस्थिति में उदासी के कारण नकारात्मक विचार हावी हो जाते हैं। वहीं खुश रहने से जीवन में सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है जिससे हमारा बुरा समय जल्द विदा लेता है। जीवन मुश्किल नहीं है, बल्कि हम इसे अपनी सोच से कठिन या आसान बनाते हैं।

आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन]
मेडिटेशन एक्सपर्ट

टी फॉर टाइम मैनेजमेंटः एक बात याद रखनी है कि मेरा टाइम सिर्फ मेरा है कोई दूसरे का उस पर अधिकार नहीं है। टाइम मैनेजमेंट एक ऐसा प्रोसेस है जो सारी जिंदगी चलता ही रहता है। भिन्न-भिन्न कार्यों को करने के लिए लगाये गए समय और उनको करने के क्रम को सोच -विचार कर व्यवस्थित करना समय प्रबंधन कहलाता है। समय प्रबंधन के लिए स्वयं का मूल्यांकन करें। तथा रोजना की बातों का डायरी मेंटेंन करने की आदत डालें तो दिनचर्या व्यवस्थित होकर समुचित समय प्रबंधन से हरेक कार्य में सफलता मिलती रहेगी और कार्य सही समय पर पूरे होते हैं।

यू फॉर अंडरस्टैंडिंग योरसेल्फः मुझे अपने मन को समझना है कि मेरा मन क्या चाहता है? क्या उसकी तमन्ना है, कामना है, इच्छा है। मन की शक्ति से ही निर्बल और साधारण लोगों ने भी बड़ी से बड़ी सफलताएं हासिल की हैं। मन को समझना ही सबसे बड़ा ज्ञान है। जो इससे नियंत्रित हो गया, वह विनाश की ओर बढ़ा। जिसने जीत लिया, जिसने मन को जीत लिया, उसने जग को जीत लिया। मन स्वयं में कुछ नहीं एक उर्वरा भूमि की तरह है। जैसे खेत को तैयार किया जाता है और उसके बाद श्रेष्ठ बीज बोए जाते हैं। बीज बोने के बाद खेत की निरंतर देखभाल होती है और समय पर सिंचाई की जाती है, खाद आदि डाली जाती है। खेत की सुरक्षा के लिए चारों ओर बाड़ लगा दी जाती है। इसके बाद लहलहाती फसल की कामना की जाती है। मन भी ऐसा ही है। मन में सुख, समृद्धि, प्रतिष्ठा और शक्ति की कामनाएं उठनी स्वाभाविक हैं, किंतु क्या मन इसके लिए तैयार है? इसके लिए खुद को चेक करें।

वी फॉर विक्ट्रीः जीत का नशा अपने अंदर चढ़ाना है कि जो भी मैं करूंगा उसमें जीत मिलेगी ही मिलेगी। हमें हमेशा इस उमंग में रहना है कि हमारे अंदर जो गलत संस्कार है उसे मार कर जीत पाना ही है। जब हम दृढ़ता से किसी भी कड़े, बुरे और पुराने संस्कार छोड़ना चाहें तो उसके लिए विजय का संकल्प लेकर नये अच्छे संस्कार धारण करना पड़ेगा। चाहे हम किसी रोग से लड़ रहें हो या किसी तरह के अस्तित्व की लड़ाई क्यों न हो हमारी जीत पक्की है यह सोच कर विजयी आत्मा बनना ही है। इस तरह भाग्य मेरी मुट्ठी में होगा चाहे कोई पुरानी आदत को छोड़ना हो या कुछ भी हो।

डब्ल्यू फॉर वॉचफुलनेसः यह बहुत ही अच्छा शब्द है माइंडफुलनेस और वॉचफुलनेस। जागरूकता का अर्थ है खुद को और खुद की क्षमताओं को पहचानना। शक्ति और क्षमताओं के आधार पर अपना अस्तित्व बनाना। होश में जीना बेहोशी में नहीं जीना यही है जागरूकता । यदि मन थोड़ी भी देर के लिए स्थिर रहे तो जागरूकता स्पष्ट हो उठेगी। जब हम सुन रहे हैं तो केवल सुन रहे हैं, खा रहे हैं तो केवल खा रहे हैं, चल रहे हैं तो केवल चल रहे हैं। ये भी मेडिटेशन है होश में जीना।

एक्स फॉर एक्सरेः एक्सरे अर्थात सेल्फ चेकिंग। दिन में दो बार, एक बार सुबह को, एक बार रात को सोने से पहले। रात को सोने से पहले चेकिंग करना आज मेरे से कोई गलती तो नहीं हुई, किसी का दिल तो नहीं दुखाया, किसी से कोई गलत व्यवहार तो नहीं किया। अगर किया है तो कल सुबह मैं सबसे पहले माफी मांगूगा। और वह भी अपने लिए मुझे अपने आप को सुधारना है। यह निश्चित करना है कि आज जो गलती हुई वो कल नही होनें दूंगा। चेक करें मन किस ओर आर्कर्षित हो खींच रहा है। मन के अंदर कैसे-कैसे विचार उठ रहे हैं, क्या वे विचार हमारे लिए या औरों के लिए उचित है? इस तरह अपने आप को आत्मा देख चेक करें।

वाई अर्थात् योग निंद्राः यह सोने का सबसे बढ़िया तरीका है। लेटे हुए अपने संकल्पों को देखते हुए अपने हरेक अंग पर सकाश रूपी शांति का प्रकंपन देते हुए निंद्राजीत बनना है। जब आप सोने जाते हो तो, कैसे सोना है उसके 9 स्टेप हैं जो योग निद्रा नाम से एक क्लास है उसे पिछले पत्रिकाओं से पढ़ सकते हैं। या यूटूब पर भी सुन सकते हैं। जो हमारा अंतिम संकल्प होता है वही सुबह का पहला संकल्प होगा। रात में हम जिस स्थिति में सोए सुबह हम उसी स्थिति में उठेंगे। इसलिए सोने की विधि क्या है, वह हर किसी को योग निद्रा के बारे पता हो। यह साइंटिफिक मेथड है इससे बहुत सारी मानसिक और शारीरिक बीमारियां दूर होती है।

जेड फॉर जेलस अर्थात् उत्साहीः आनंदपूर्ण प्रयत्न के साथ हर कर्म को करने वाले ही उत्साही इंसान होते हैं। उत्साह और उमंग के बिना जीवन व्यर्थ है। जीवन में उत्साह तभी होगा जब जीवन का कोई श्रेष्ठ लक्ष्य होगा। लक्ष्य के बिना मनुष्य का जीवन पशुतुल्य है। उद्देश्य मन मुताबिक और रचनात्मक होना चाहिए ताकि उसकी पूर्ति में हम उत्साह महसूस कर सकें। विश्व में जितने भी महान और महत्वपूर्ण आंदोलन हुए हैं, वे उत्साह से ही सफल हुए हैं। उत्साह और मनुष्य की उम्र में कोई संबंध नहीं होता। इसलिए कई बार हम देखते हैं कि किसी बुजुर्ग ने ऐसा कारनामा कर दिखाया जो ढलती उम्र में असंभव सा लगता है। जैसे सेवानिवृति के कुछ सालों बाद ही ज्यादातर बुजुर्ग बिस्तर पकड़ लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो इस उम्र में पहाड़ चढ़ने सरीखे कठिन कार्यों को अंजाम देते हैं और समाज को नई राह दिखाते हैं।

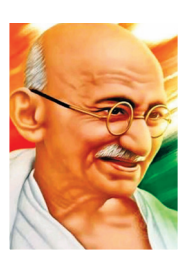

महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता भारत

"मेरा मन मेरा मंदिर है, मै किसी को भी अपने गंदे पांव के साथ मेरे मन से नहीं गुजरने दूंगा"

जयप्रकाश नारायण, स्वतंत्रता सेनानी

"मेरी रूची सत्ता के कब्जे में नहीं, बल्कि लोगों द्वारा सत्ता के नियंत्रण में है। आप जो कोई भी हों, एक अच्छे इंसान बनें"

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

मैं और मेरा के अंतर को समझना जरूरी

मैं और मेरा का अंतर ही खुद को समझने के लिए काफी है इस बात को समझना ही हरेक तरह के ज्ञान को समझने के लिए बहुत है।

शिव आमंत्रण आबू रोड। एक प्रकार का डर जैसा कि हाय कुछ हो न जाये। इसको यह चीज मिला था एन्जॉय करने के लिए उसके साथ खुश रहने के लिए लेकिन खुश क्यों नहीं रह पाए क्योंकि ये विचार पैदा कर दिया कि हाय ये खो न जाये जबकि मालूम है कि एक न एक दिन तो ऐसा होना ही है, जाना ही है। जिस मिनट भी मैंने डर का विचार पैदा किया खुशी गुम हो गयी। मेरी फॅमिली को कुछ ना हो जाये, मेरे बच्चों को कुछ न हो जाये, मेरे मकान को कुछ न हो जाये और सबसे जयादा डर कहीं मुझे कुछ न हो जाये।

जो चीज जितनी पहले मिली हुई होगी ज्यादा उसके खोने का डर होगा इसलिए डर होता है कहीं मुझे कुछ न हो जाये। जब हम 'मैं' शब्द बोलते है कौन सी फोटो सामने आती है? आप कहेंगे मेरी बॉडी। मैं और मेरा क्या ये एक ही बात है या अलग है कुछ। अलग है। आप कहेंगे मेरे हाथ में दर्द है, मेरे शरीर मैं दर्द है। तो शरीर के एक-एक अंग के लिए हम कहते है मेरा हाथ, मेरा पैर, मेरा सिर। तो मैं शरीर या मेरा शरीर। जो चीज मेरी है उसको ही मैं समझकर चलें तो चलेगा? क्या गड़बड़ होगी? क्या प्रॉब्लम आएगी?

मैं और मेरा को समझना ही असली ज्ञान

अच्छा समझो अपने को जो ड्रेस पहना है वो एक दिन के लिए मान लीजिये कि ये मैं हूं मेरी काली शर्ट नहीं, मैं काली शर्ट हूं। अब घर पर खाना खाते समय सब्जी गिरी तो किस पर गिरी। मेरी शर्ट पर नहीं मुझ पर गिर गई तो तनाव का लेवल कितना होगा। अब एक दूसरे से तुलना करते हैं कि ये पिंक शर्ट इस शर्ट से सुंदर है। इसका मतलब वो मेरे से जयादा सुन्दर है। फिर चलते-चलते दरवाजे में ये कपड़ा अटक गया। थोड़ा सा फट गया कौन फट गया? कौन कट गया? मैं फट गया फिर रात तक तो ये ड्रेस पूरी तरह से ही ख़तम हो गयी कौन ख़त्म हो गया? मैं ख़तम हो गया। क्या ये सच है? नहीं। हर एक पड़ाव पर चाहे वो गन्दा हुआ, चाहे मैंने अपने आप की किसी से तुलना की, चाहे इसका थोड़ा सा कुछ फट गया, चाहे ये पूरा ख़तम हो गया। मैं बहुत ज्यादा तनाव और डर को महसूस करती हूं क्यूंकि मैंने ये सोचा कि मैं ये ड्रेस हूं जो कि गलत है। जब हमारा शरीर बीमार होता है तो हम ये नहीं कहते मेरा शरीर बीमार है हम कहते मै बीमार हूं क्योंकि मैं कौन हूं? शरीर, वैसे ही जैसे ये ड्रेस फट जाती है तो हम कहते है मैं फट गया क्योंकि मैं कौन हूं? मैं ये ड्रेस हूं। बिल्कूल नहीं।

मैं आत्मा मेरा शरीर केवल जड़ है

अभी दो संकल्पों को देखिए 'हाय! मैं बीमार हूं ' या 'मेरा शरीर बीमार है' क्या दोनों में कोई फर्क है? किसमें दुःख ज्यादा है? मैं बीमार हूं, जो क्या सत्य नहीं है। क्योंकि यह मैं नहीं हूं, यह मेरा है और अब सबसे महत्वपूर्ण बात जब यह शरीर रूपी कपड़ा ख़त्म हो जाता है तो हम क्या कहते है वो मर गया। वह नहीं मर गए यह कपडा ख़त्म हो गया। दोनों बातों में कितना अंतर है। यह शरीर तो एक हड्डी मांस का पुतला है। जब इससे किसी को मारना है किसी को आशीर्वाद देना है तो यह कौन निर्णय करता है? मैं फैसला करती हूं कि क्या करना है? क्या देखना है इन आंखों के द्वारा? क्या सुनना है इन कानों के द्वारा ? ये सब मैं निर्णय करती हूं। हमने दोनों को एक कर दिया परन्तु मेरा शरीर केवल जड़ है। आज है कल ख़त्म। मैं एनजी हूं जो कि इस शरीर को यूज़ करती हूं। एनर्जी, लाइट, स्पिरिट, पावर कोई भी शब्द इस्तेमाल करें। शब्द इम्पोर्टेन्ट नहीं है। महत्वपूर्ण है इसको महसूस करना। एनर्जी ना ही पैदा होती है न ही ख़त्म होती है। तो मरता कौन है? शरीर मरता है। मैं नहीं मरता। मैं इस शरीर की मालिक हूं। मैं इस शरीर को पहन अपना रोल अदा कर रही हूं। अब इस सोच से कोई फर्क पड़ेगा या नहीं।

ओरिजिनल प्रॉपर्टी चेंज नहीं होती

मान लीजिए आप किसी कंपनी में गए तो गेट पर आपको वॉचमैन मिलता है आप उससे कैसे बात करते है? उसके बाद आप धीरे-धीरे कंपनी में अंदर जाते हैं वहां रेसेप्सिनिस्ट से कैसे बात करते है? उसके बाद कंपनी के एम डी से बात करते हैं कैसे बात करते है? क्या इन सभी लोगों से हम एक ही तरीके से बात करते हैं? दस मिनट के दौरान अगर हम तीन लोगों से मिले तो तीनों के साथ हमारा व्यवहार अलग अलग होता है। तो हमारा ओरिजिनल व्यवहार कौन सा है? हमारी नेचुरल नेचर कौन सी है? जो चीज बार-बार चेंज हो जाये वो ओरिजिनल नहीं होती। क्योंकि जो किसी की ओरिजिनल प्रॉपर्टी है वह चेंज नहीं हो सकती। वॉचमैन से लेकर एम डी तक हम किस से बात कर रहे थे उनकी पोजीशन से।

आत्मा समझ बात नहीं करना ही अहंकार है

अब हमारे पास कोई आता है मारुती 800 लेकर हम उनसें बात करते हैं उसके बाद कोई आता अपनी नई 20 लाख की कार में तो हम उनसे बात करते हैं दोनों में कोई अंतर? किस से कैसे बात कर रहे हैं? उनकी गाड़ी के हिसाब से। उनको कहो आप साइड में हो जाओ हमें गाड़ी से बात करनी है। इस लिए वो लोग अपने नाम के साथ अपनी पोजीशन जैसे की चेयरमैन वगैरह लिखा के रखते हैं क्योंकि उनको पता है ये देखकर लोगों के मन में आएगा के ये बड़े व्यक्ति है। नहीं तो उनसे कैसे बात करेंगें? तो उस रेस्पेक्ट को प्राप्त करने के लिए वो अपने टाइटल को पकड़ कर रखते हैं क्योंकि हम बात किससे करते हैं टाइटल से, पोजीशन से, स्टेटस से, एजुकेशन से, बैंक बैलेंस से, कौन सी ड्रेस से...। हम उनको आत्मा समझ बात नहीं कर रहे होते हैं और यही अहंकार है।

खुद को आत्मा समझने से सभी गुण आयेगें

मैं शरीर हूं, मैं डॉक्टर हूं, मैं पति हूं,पत्नी हूं, ये सब अपनी गलत पहचान से सम्बन्ध रखना है। मैं इंडियन हूं नहीं मैं इंडिया में रहता हूं। मैं हिन्दू हूं, मुसलमान हूं ये भी गलत है। आज जब भी हम एक दूसरे से बात करते हैं तो बीच में ये बातें बैरियर बनकर आ जाती है। ये बैरियर अंहकार है। ये हमारे रिश्तों को स्मूथ यूनिवर्सल फ्लोइंग नहीं बनता है क्योंकि हम अलग-अलग हो चुके हैं देश, धर्म,भाषा, जाति, या स्टेटस के आधार से। लेकिन जब हमारा ध्यान हमारी असली पहचान की तरफ जाता है कि मैं कौन, मैं एक पवित्र आत्मा हूं और वो जो गेट पर वॉचमैन खड़ा है वो भी शुद्ध आत्मा है, जो चेयरमैन है वो भी शुद्ध आत्मा है। आज हम चेयरमैन से बात करते हैं रेस्पेक्ट भी देते हैं लेकिन वो रेस्पेक्ट भी बहुत थोड़े समय के लिए आर्टिफिशल होता है। उनके रूम के बाहर आएंगे और उनके बारे में बात करने लगेंगें। अब जब हम सभी को शुद्ध एनर्जी आत्मा समझ बात करेंगे तो हमारा बिहेवियर चेंज होगा? नहीं। तो ये कौन सी एनर्जी है पॉजिटिव।

डॉ. अजय शुक्ला] बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आनंददायी स्थिति द्वारा स्वाभाविक संतुष्टता की अनुभूति

जीवन का मनोविज्ञान- 17

सृष्टि पर सर्व मानव आत्माओं का आगमन उच्च कोटि के कल्याणकारी कार्यों की पूर्णता एवं संपन्नता के लिए हुआ है। व्यक्ति जब मन, वचन एवं कर्म की पवित्रता हेतु स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ में संलग्न करता है , तब उसके धर्मगत आचरण और कर्मगत व्यवहार से यह ज्ञात हो जाता है कि वह किन महान कर्तव्यों के लिए जन्मा है। मानवीय स्वभाव में यह सत्य निहित रहता है कि व्यक्तिगत अनुभूति सदा आत्मिक चेतना के आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग पर गतिशील बना रहे। जीवन का उजला पक्ष जब आनंददाई स्थिति में विराजमान होता है , तब अंतर्मन परमात्मा सत्ता की संकल्पना को साकार करने के लिए ईश्वर की परवाह करता है। क्योंकि जीवन पर्यंत उस परमेश्वर ने हमारी परवाह की है। आध्यात्मिक जगत के अधिकतम अनुसंधान इस सत्य को संपूर्ण तथ्य के साथ प्रमाणित कर चुके हैं कि आत्मा एवं परमात्मा के संबंधों की परिणिति किसी भी परिस्थिति में आनंददाई स्थिति द्वारा केवल स्वाभाविक संतुष्टता का सुखद परिणाम है।

मानवीय दृष्टिकोण में नैसर्गिक बोध का स्वरूप

जीवन में नैतिकता के अनुपालन का आंतरिक सुख प्राप्त करने में व्यक्ति की साफ-सुथरी नीयत सहायक होती है जो मनुष्य को सही नीति पर चलने हेतु अभिप्रेरित करती रहती है। आत्म चिंतन के नैसर्गिक बोध से सराबोर मानवीय दृष्टिकोण अपने केंद्र में सदैव सर्व के प्रति समभाव की श्रेष्ठता को बनाए रखने का पुरुषार्थ करता है। व्यक्तिगत जीवन की व्यावहारिक अनुभूतियां मानव को महामानव बन जाने के लिए आत्मिक स्वरूप में- ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता एवं शक्ति संपन्नता से युक्त होकर धारणात्मक पक्ष को मजबूत बनाने पर प्रायः बल देती हैं। मानवीय दृष्टिकोण में आत्म जगत की समझ का विकसित स्वरूप जब जिज्ञासु प्रवृत्ति से सीखने एवं अनुभव करने हेतु तत्पर हो जाता है तब मनुष्य के भीतर आत्म - तत्व, स्मृति और स्थिति का नैसर्गिक बोध श्रेष्ठ अवस्था के साथ पवित्र स्वरूप को स्थायित्व प्रदान करता है। जीवन में संपूर्ण शक्ति के साथ पुण्य कर्म करने के परिदृश्य में एक ही अभिलाषा कार्य करती है जिसमें स्वयं की दृष्टि बदलने से ही सृष्टि बदल जाने का वास्तविक सत्य समाहित रहता है।

गुणात्मक परिणाम की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयास

मानव द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर किए जाने वाले पुरुषार्थ का आरंभ लोक व्यवहार के अंतर्गत प्रतिदिन के धर्म एवं कर्म से होता है। जीवन की गतिशीलता का सूक्ष्म तत्व व्यक्तिगत प्रयास से होता हुआ अनुभूति से गुजरता है जिसमें समयानुसार प्रेरणा की आवश्यकता पड़ती है। कर्म का दर्शन सदा सर्व आत्माओं को इस सत्य से परिचित कराते हुए उसे अपनाने पर बल देता है कि - फल की इच्छा किए बिना कर्म की गुणवत्ता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण होता है। आत्म तत्व के आध्यात्मिक उत्थान में सदा यह मूल्यांकन होता रहता है कि व्यक्ति द्वारा अंततः कितना गुणात्मक स्तर के पुरुषार्थ का विनियोजन किया गया है और इस सतत प्रयास से किस प्रकार की स्वाभाविक संतुष्टता निर्मित हो सकती है। स्वयं के आत्मिक परिष्कार में मनुष्य जीवन की सार्थकता का आंकलन श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्रता के गुणात्मक परिणाम से जुड़ा होता है जिसमें भागीरथ पुरुषार्थ द्वारा समर्पण का विशेष महत्व होता है!

जीवन में चित्त की स्थिरता का पक्ष

व्यक्तिगत पुरुषार्थ के परिवेश में निजी जीवन का विकास और मानवता का कल्याण जब एक साथ क्रियान्वित होने लगते हैं तब अंतर्मन प्रसन्न चित अवस्था में परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य जीवन के समक्ष चित एवं चरित्र की स्थिरता के कई पक्ष प्रेरणादाई स्वरूप में प्रकट होते हैं उनमें प्रमुख रूप से- शिक्षा, सक्षमता, कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता एवं ईमानदारी की विशिष्ट भूमिका होती है। जब व्यक्ति स्वयं को उपयोगी बना लेता है तब वह जीवन के विविध आयाम से संबद्ध संसाधनों का स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप में अधिकतम उपयोग संपूर्ण मनोयोग से मानव कल्याण हेतु कर पाता है। जीवन में अंतःकरण की स्थिरता का पक्ष इतना व्यापक होता है कि इसमें व्यक्ति के मूलभूत गुण एवं शक्तियां नैसर्गिक रूप से सर्व आत्माओं को प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। व्यक्ति के विराट स्वरूप में आत्मिक ज्ञान का स्थानांतरण होने के पश्चात ही अनुभूतिगत स्थिति का अभ्युदय होता है जो मानव को आनंददायी स्थिति की ओर गतिशील कर देता है।

अव्यक्त अवस्था के प्रति गहन आत्मनिष्ठ मूल्य सामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार की अनुभूति

आनंद जीवन की व्यापकता के अंतर्गत तभी प्राप्त हो पाता है जब व्यक्ति धर्म-कर्म से मुक्ति और जीवन मुक्ति की स्थिति को व्यवहार में उतार लेता है। निजी जीवन में अव्यक्त अवस्था के प्रति गहन आत्मनिष्ठ मूल्य प्रकट होने का अर्थ है कि व्यक्ति द्वारा अध्यात्म एवं पुरुषार्थ से कर्मातीत अवस्था का निर्माण कर लिया गया है। जीवन की अनुभूतियां जब आध्यात्मिकता के क्षेत्र में स्वाभाविकता की श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित हो जाती हैं तब राजयोग तथा मौन की महान उपलब्धि से अव्यक्त स्वरूप को प्राप्त करना नैसर्गिक बोध का कारक बन जाता है। अनुभूतिगत सत्यता तथा आनंददायी स्थिति की सुखद परिणिति व्यक्ति के गुणात्मक एवं अथक प्रयास का प्रमाण होते हैं। जीवन में चित्त की स्थिरता और चरित्र की उज्जवलता से ही अव्यक्त अवस्था के आनंददायी पक्ष को व्यवहार में क्रियान्वित किया जा सकता है।

रियल लाइफ

यज्ञ माता-पिता द्वारा अलौकिक शिक्षा और पालना

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

अतः सावधान हो जाओ वरना आपका बहुत घाटा हो जायेगा। अब इस पुरूषोत्तम संगमयुग में ज्ञान रूपी स्वदर्शन-चक्र धारण करने से आपके मन के आसुरी संकल्प निर्मूल होते जायेंगे...।

दिव्य गुणों की धारणा पर ध्यान

बाबा ने अन्तर्मुखता, गम्भीरता, सहनशीलता, नम्रता आदि-आदि दिव्य गुणों की धारणा के लिए भी ज्ञान के बहुत गुह्य रहस्य समझाये। उससे यज्ञ-वत्सों के जीवन में दिव्यता और हर्ष दिनों दिन बढ़ते गए।

यज्ञ-माता और यज्ञ-पिता द्वारा अलौकिक शिक्षा और पालना

बाबा ने तथा ओम राधे जी ने, जिन्हें कि हम 'यज्ञ-माता' और 'यज्ञ-पिता' के अलौकिक नाम से भी याद करते थे, यज्ञ - वत्सों को खान-पान आदि-आदि की पूरी सुविधाएं दीं। यज्ञ-वत्यों ने ऐसा सुख अनुभव किया और उन्हें यज्ञ-माता से वह स्नेह मिला कि उन्हें स्वर्ग का सुख भी फीका लगने लगा और उन्हें इस संसार की तथा दैहिक संबन्धों की भी सुधबुध भूल गई। अहा! इस पुरूषोत्तम संगमयुग में यह जो धर्म के माता-पिता से सभी को निष्काम, शुद्ध और आत्मिक प्यार मिला उसका वर्णन करना असंभव है। करोड़ों रूपये खर्च करने पर भी नहीं मिल सकता। इस पृथ्वी पर ईश्वर द्वारा पालना लेने का यही एक सुनहरा अवसर सारे कल्प में आत्माओं को मिलता है। जिन्होंने उसका अनुभव किया है, वे गोप-गोपियां ही इसे जानती हैं और नहीं जानता कोई! इस राजऋषि कुल में बाबा ने न केवल पिता का, शिक्षक का और धर्म-ज्ञान दाता का पार्ट बजाया बल्कि वे वत्सों को अति प्रेम से सागर के तट पर घूमने भी ले जाते, उन्हें पिकनिक भी कराते, उनके लिए खेलकूद की सब व्यवस्था का ख्याल रखते, उनमें से किसी का स्वास्थ्य बिगड़ता तो उसकी चिकित्सा तथा सेवा के लिए सभी तरह का सुमुचित प्रबन्ध बनाये रखते। किसी भी वस्तु की कमी न थी। कितने ही अच्छे किसी के लौकिक माता-पिता हों, ऐसा सुख, ऐसा लाड़-प्यार, ऐसा लालन-पालन कोई भी कभी नहीं दे सकता। बाबा ने ही माता का भी पार्ट बजाया और भक्ति-मार्ग में यह जो शुभेच्छा भगवान के प्रति व्यक्त की जाती है कि "हे प्रभु तुम्हीं माता और तुम्हीं पिता हो और तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे हैं।"इसका प्रैक्टिकल अनुभव यज्ञ- वत्सों ने इस ज्ञान-मार्ग में किया। परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके माता-पिता के रूप में अत्माओं को ऐसा लाड़-प्यार दिया जिसका यज्ञ-वत्सों के मन-चित्त में कभी संकल्प ही न था। अतः हर्ष से उनका मन कह उठा-

सुख की आई घड़ी, जब से मैं 'ओम् मण्डली' गई
प्रभु से प्रीति जुटी, सखी री मेरे सुख की आई घड़ी
मन-वश करने मंत्र मिला मुझे, लगी न एक घड़ी
दिव्य दृष्टि मिली मोहे क्षण में, वैकुण्ठ आन खड़ी
मैंने कृष्ण से रास करी, सखी री ...
हर्ष-शोक की आग उफाणी, सुख-पद समाधि चढ़ी सुख की आई घड़ी, मुझे लगी न एक घड़ी, सखी री...
ज्ञान-अमृत बिन जिया घबराय, बिछड़ूं न एक घड़ी मैं तो अब प्रभु के हाथ बिकाणी रे, तन, मन सुध बिसरी
सुख की आई घड़ी, मैं तो जीते-जी मरी, जब से ओम मण्डली गई।

राजसूय अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ

अब दस ज्ञान-यज्ञ की, जिसे कि "राजसूय अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ" भी कहा जाता था, मुख्य रूप से ओम् राधे जी ही संभाल करती थीं। यूं थीं तो वह एक बाल ब्रह्मचारिणी अथवा एक कन्या ही परन्तु यज्ञ-पिता अथवा पिता श्री ने उन्हें ही विशेष तौर पर उतरदायी इहराया हुआ था क्योंकि वे ईश्वरीय ज्ञान एवं दिव्य गुणों की धारणा में अन्य सभी से आगे थीं। उनका जीवन और पुरुषार्थ सभी यज्ञ-वत्सों में से सर्वाधिक उच्च था। उन्हें देखने से ही ऐसा लगता था कि सभी दिव्य-गुण इकट्ठे होकर उनमें ही सजीव रूप में साकार अथवा मूर्त रूप हुए हैं। ज्ञान-वीणा -वादन में वे सर्वोपरि थीं और उनकी कोई उपमा नहीं थी। इसलिए उन्हें 'यज्ञ-माता' शब्द से संबोधित करती थीं क्योंकि अब तो वे जगत् की अंबा थीं और अब तो सभी का उनसें आत्मिक नाता अथवा अथवा ज्ञान का नाता था। बाबा के लिए थी तो वे भी एक वत्स अथवा पुत्री ही परन्तु बाबा भी उन्हें 'मम्मा या माँ' के मधुर शब्द से बुलाते थे और 'बेटी 'कहकर भी बुलाते थे।

क्रमशः...

पिछले अंक में आपने जाना कि निद्रा अवस्था को सतोगुणी बनाने पर ध्यान देते हुए गहन ईश्वरीय पढ़ाई पर भी सभी ईश्वरीय वत्सों ने ध्यान के साथ लगन लगाना शुरू किया।

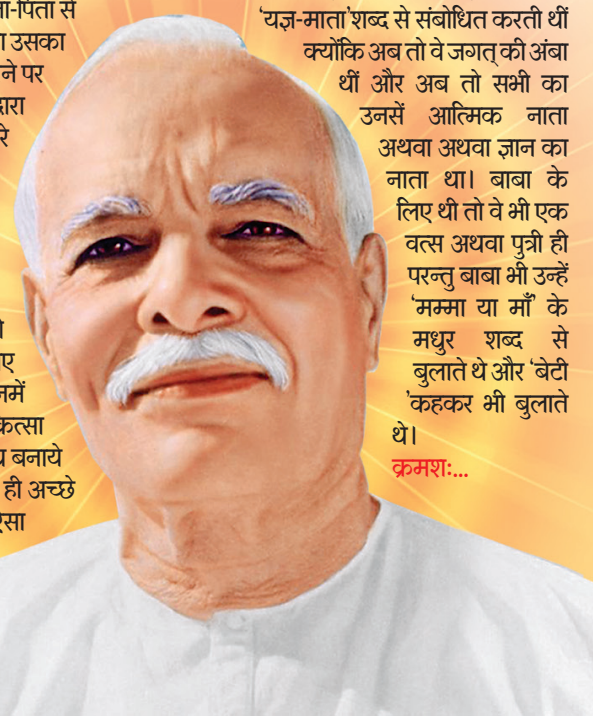

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे। इस बार रेडियो मधुबन को राष्ट्रीय पुरूस्कार से नवाजा गया तथा बीके मृत्युंजय को भारत गौरव आवर्ड से नवाजा गया।

रेडियो मधुबन 90.4 एफएम रेडियो को तीन राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया

रेडियो मधुबन को मिले तीन राष्ट्रीय पुरस्कार।

शिव आमंत्रण आबू रोड। माउण्ट आबू एवं आसपास के क्षेत्रों में आमजन की आवाज बना ब्रह्माकुमारीज के द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो स्टेशन को जनसरोकारी कार्यक्रमों के लिए केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्रालय के द्वारा नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो सम्मेलन में तीन राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त किया है। यह अवार्ड केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने प्रदान किया। रेडियो मधुबन प्रसारित होने वाले कार्यक्रम नन्हें सितारे को वर्ष 2018 के लिए कम्युनिटी एंगेजमेंट कैटेगरी में प्रथम पुरस्कार, मारवाड़ी भाषा में आपणो समाज जो मारवाड़ी भाषा में स्थानीय लोगों द्वारा निर्माण और प्रसारित किया जाता है उसे वर्ष 2018 के लिए प्रमोटिंग लोकल कल्चर कैटेगरी में तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। मारवाड़ी भाषा में प्रसारित कार्यक्रम गांव री बातें को वर्ष 2019 के लिए प्रमोटिंग लोकल कल्चर कैटेगरी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। सूचना प्रसारण द्वारा आयोजित होने वाले 7 वें राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो सम्मेलन में पूरे देश के 250 से ज्यादा सामुदायिक रेडियो भाग ले रहे हैं जिनमें से पांच अलग-अलग विभाग में वर्ष 2018 के लिए 14 एवं वर्ष 2019 के लिए 14 राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये गये हैं। रेडियो मधुबन के हिस्से में कुल 3 राष्ट्रीय पुरस्कार आए जो कुल पुरस्कार के 10 प्रतिशत से ज़्यादा है। इस तरह रेडियो मधुबन ने देश में ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू और राजस्थान का नाम रोशन किया है। उक्त पुरस्कार रेडियो मधुबन के स्टेशन मैनेजर यशवन्त पाटिल को प्रदान किया।

बीके मृत्युंजय, बीके डॉ. दीपक हरके को भारत गौरव अवार्ड से नवाजा

अवार्ड स्वीकारते हुए बीके मृत्युंजय और डॉ. दीपक हरके।

शिव आमंत्रण नई दिल्ली। संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं के लिए प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय एवं बीके दीपक हरके को नई दिल्ली के ताज पैलेस होटल में 'भारत गौरव अवार्ड' से सम्मानित किया गया है, जिसे केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री रतनलाल कटारिया ने बीके मृत्युंजय एवं बीके दीपक को प्रदान किया। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्य नारायण जाटिया, बिजू जनता दल के पूर्व संसद सदस्य प्रसन्न कुमार पाटसानी, भारत गौरव फाउण्डेशन के अध्यक्ष संदेश यादव उपस्थित थे। शिक्षा प्रभाग के अंतर्गत बीके मृत्युंजय के मार्गदर्शन से महाराष्ट्र के सतारा स्थित नागठाणे के स्कूलों में राजयोग मेडिटेशन के प्रसार के लिए बीके दीपक को भारत गौरव अवार्ड का सम्मान प्राप्त हुआ।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में..पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

राजयोग को अपनाएं जीवन में निरंतर खुशियां पाएं

बीके मुकेश
ब्रह्माकुमारीज केंद्र विद्यार्थी सुपौल (बिहार)

16 वर्ष की आयु में करीब 11 वर्ष पहले मुझे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का ईश्वरीय ज्ञान के साथ मेडिटेशन सीखने को मिला। जिसके अभ्यास से जीवन में भरपूर सुख, शांति, आनंद, प्रेम का अनुभव किया। क्योंकि जीवन में पहले दुःख-अशांति के साथ काफी क्रोधी, छोटी-छोटी बातों में आशांत हो जाना, बदला लेने की भावना बना रहता था। लेकिन अब मधुरता, हर्षितमुखता, संतुष्टता और नम्रता जैसे दैवी गुण के साथ खुशनुमा जीवन व्यतीत कर रहा हूं। अब मेरा कोई अपकार करे तो भी उस पर भी शुभभावना, शुभकामना बनाये रखना हमारी नेचर में आ गया है। युवाओं से कहना चाहुंगा कि वे अपने जीवन में ब्रह्माकुमारीज़ के नजदीकी सेवाकेंद्र पर राजयोग के अभ्यास को अपनाएं और निरंतर खुशियों से भरा जीवन पायें।

मेडिटेशन के अभ्यास से होती है संकल्प सिद्धी

नवीन अग्रवाल
व्याख्याता, नगरी निकाय बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

मैं एक विद्यालय में व्याख्याता के रूप में कार्यरत हूं। अब से पहले जहां पदस्थ था वहां अपने निवास से काफी दूरी होने के वजह से बहुत परेशानीयों को उठाने पड़ते थे। उसके साथ भी कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। जिसके वजह से बहुत अशांत रहता था। तब मुझे बड़े पद-पोजिशन के अधिकारीयों से रिश्वत लेने-देने के विचार से अपने अनुसार के स्थान पर नियुक्ति चाह रहा था। इसके लिए कोशिश भी किया परंतु सफल नहीं हो पाया। उसी दौरान मुझे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से मेडिटेशन सीखने को मिला, तब मैंने अपने संकल्पों को सकारात्मकता से सोचा कि मेरा तो एप्रोच संसार के हाईएस्ट ऑथिरिटी परमपिता परमात्मा से है। मुझे किस बात कि चिंता। मेरा तो सारा काम सफल हुआ ही पड़ा है।

आओ मनाएं सच्ची दीवाली... मन के अज्ञान, अंधकार को मिटाकर ज्ञान का दीप जलाएं

श्रीलक्ष्मी के समान जीवन में दिव्यगुणों को धारण करना हो लक्ष्य

दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

दीपावली का त्यौहार भारतवर्ष में बहुत ही महत्त्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन हर वर्ष त्यौहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आहान करते हैं। परन्तु इतना नहीं समझते कि एक तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का वाहन उल्लू को दिखाते हैं और दूसरी तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आहान करते हैं परन्तु विचार करने की बात है कि जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आएगी कैसे? वह तो हमसे दूर भाग जायेगी।

अब परमपिता परमात्मा शिव आकर हम सभी को दीपावली का सच्चा-सच्चा रहस्य समझाते हैं कि हे वत्सो! तुम द्वापर से लेकर हर वर्ष दीपावली मनाते आए हो। अतः परमपिता परमात्मा शिव अब कहते हैं कि बच्चों, घरों की सफाई करना या दीपक आदि जलाना ते साधारण-सी बात है। परन्तु परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरूषोत्तम संगम युग पर दीपावली का वास्तविक रहस्य के अनुसार यदि वास्तविक लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। इसी के लिए परमपिता परमात्मा हमें समझाते हैं कि हे वत्सो, तुम्हारी आत्मा में 63 जन्मों से 5 विकारों रूपी मैल चढ़ा हुआ है। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घरों से इन 5 विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकता और सही अर्थों में दीपावली नहीं हो सकती है।

कार्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर-घर में प्रकाश दीप जगमगा उठते हैं और बाल-वृद्ध आनन्द से भर जाते हैं। व्यापारी वर्ग दस शुभ दिवस पर पुराने खाते को बन्द कर नया खता खोलते हैं। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जला कर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक हैं विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अन्तरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीपक जला कर बच्चों

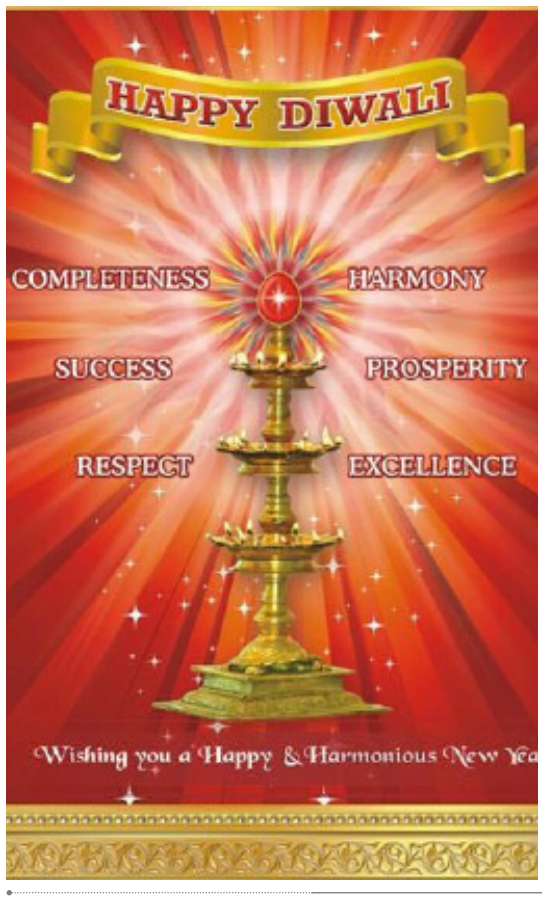

को खुश करते है। मन-कन्दिर की सफाई करने की जगह बाहरी सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अन्धकार छाया हुआ है। कहीं कुछ भी सूझ नहीं रहा है। मत मतान्तर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति दस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापन होगी जहाँ रतन जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी। इस युगान्तरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्यौहार मनाते हैं। दस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मन्दिर में सदा दीप नहीं जलता है लेकिन आज भी भगवान विश्वनाथ के मन्दिर में अन्वरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी दस दिन पुराने खाते को बन्द कर नया खाता खोलते हैं। औगढ़ दानी भोलानाथ भगवान् शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बन्दकर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें। दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्त्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता है उसकी अधम-गीत होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में कुछ सम्पत्ति हम दाँव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मानते हैं और महान् आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं। कहां यह ईश्वरीय जुआ और कहां वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मन्दिर की सफाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, 'आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खता बन्द कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो दस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापन हो जायेगी जहाँ दुःख-अशान्ति का नामो निशान भी नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन-सम्पत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान् अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में।

(- जगदीशचंद्र हसीजा द्वारा लिखित पुस्तक त्योहारों का आध्यात्मिक रहस्य से साभार)

पेज 2 का शेष..... विशेष साक्षात्कार बीके मुन्नी

जब बाबा के शरीर छोड़ने का समाचार मिला

उन्होंने कहा कि मैं कोलकाता गई तो मेरा मन बिल्कुल ही नहीं लगता था। फिर 1969 में इलाहाबाद में कुंभ का मेला था। उसमें हम गए थे वहां ही मुझे बाबा के बारे के बारे में समाचार मिला की बाबा ने शरीर छोड़ा है। फिर इलाहाबाद से ट्रेन से दिल्ली आए। दिल्ली से उदयपुर फ्लाइट किया। उदयपुर से माउंट आबू आई। उस समय बाबा का अंतिम संस्कार दादी ने जैसे किया वो सब हमने देखा था, तब हमने दादी का भी उसी तरह किया।

फिर पिताजी ने दादी के हाथ में दिया मेरा हाथ

उन दिनों मधुबन में पढ़ी-लिखी कुमारियों की ट्रेनिंग होने वाली थी। तब हमने पिताजी को कहा कि मुझे यह ट्रेनिंग करना है। मेरी जिद पर पिताजी लेकर आबू आए और दादी से कहा कि इसे आप अपने पास रखिये या मेरे पास ही रहेगी ये कहीं और नहीं जाएगी। इसे किसी सेंटर पर भेज नहीं सकते। मैं लालन-पालन बहुत ही लाड़ प्यार में हुआ था।

ईमानदारी और आज्ञाकारी के स्वभाव से जिम्मेवारी का ताज

ईमानदार, फरमानदार, सच्चाई- सफाई एक एक बात दादी ने मुझे प्रैक्टिकल में सिखाई। दादी के हर कार्य को ऐसे समझती थी कि दादी का हर कार्य मेरा है। कोई भी सेवा कोई भी काम होता था तो मैं दादी को कहती थी दादी आप निश्चिंत रहो मैं कर लूंगी। दादी आप सब से मिलो -जुलो। मैं सारा काम करके आती हूं। आज्ञाकारी होने से दादी ने मुझे हर चीज सौंप दिया। दादी ने मेरी विशेषता और वफादारी को देखकर एक-एक करके सभी जिम्मेवारी सौंपती गई।

राम की हनुमान बनकर अंत तक दादी के साथ रही

बाबा का प्यार तो था ही लेकिन दादी का प्यार मेरे रोम रोम में बस गया था। दादी के साथ 1969 से 2005 तक साथ रही। दादी ने कहा और मैंने किया। यदि दादी कुछ भी कहती थी तो मैंने कभी सोचा ही नहीं। दादी के साथ अंतिम घड़ी तक साथ रहने का सौभाग्य मिला। आज दादी भले ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी सूक्ष्म उपस्थिति का आज भी एहसास होता है। मैं उनसे संकल्प करके ही काम करती हूं।

संयमित आहार तेज दिमाग का आधार

आलू मुख्य रूप से किसी भी चीज में तीनों टाइम पसंद है। बाकी सबकुछ पसंद है। दलिया भी बहुत पसंद है। रात में 10:30 बजे सोती हूं और सबेरे 4 बजे उठती हूं। आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा, फिर नाश्ता और फिर दोपहर ढाई बजे भोजन कर शाम चार बजे थोड़ा आराम करती हूं।

उठें तो मुस्कुराते हुए, सोये तो भी मुस्कुराते हुए और फिर सारी चिंता खत्म : बीके सूरज

बीके सूरज भाई को हाथी पर स्वागत करते हुए लोग।

शिव आमंत्रण
अजमेर। अजमेर में मुख्यालय से आए संस्था के वरिष्ठ राजयोगी बीके सूरज के आगमन पर समस्याओं के समाधान नामक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक वासुदेव देवनानी, अजमेर सबज़ोन प्रभारी बीके शांता, बीके रुपा, बीके रुपेश समेत अन्य बीके सदस्यों द्वारा किया गया। वहीं दूसरे कार्यक्रम में बीके सूरज ने गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित करते हुए बताया, कि मन में बातों का चिंतन कई समस्याओं को जन्म देता है, इसलिए सदैव मुस्कुराते हुए जीवन जीए, उठे तो मुस्कुराते हुए सोए तो मुस्कुराते हुए सोये फिर सारी चिंता खत्म। मनुष्य बहुत सारी बातें मन में लेकर सोते हैं, उठते हैं तो बहुत सारी बातें मन में लेकर उठते हैं। यह सारी बातें मन में इकट्ठी हो जाती है और उसी कारण हम समस्याओं का सामना करते हैं। हमारे अंदर बहुत शक्तियां हैं। वह सोई हुई रहती है। उनको जगाना है। हम सर्वशक्तिमान भगवान की संतान है। भगवान से नाता जोड़ने से सारी खोई हुई शक्तियां जाग्रत हो जाती है। वह हमारा पिता है इस बात को सोचने से हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। हमारा पिता सर्वशक्तिमान है। हमारा मन बहुत शक्तिशाली है। उनके स्वागत में उनको हाथी पर बिठाकर लाया गया।

म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान का शानदार आगाज

म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान अभियान से जनता में आएगी खुशहाली: मंत्री प्रताप सिंह

अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते मंत्री खाचरियावास।

शिव आमंत्रण **जयपुर।** ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा पूरे प्रदेश की खुशहाली और सर्वांगिण विकास के ध्येय से आयोजित म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान का सवाई मानसिंह अस्पताल के सुश्रुत सभागार से शानदार आगाज हो गया है। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के परिवहन और सैनिक कल्याण मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास और चिकित्सा राज्यमंत्री सुभाष गर्ग ने 33 जिलों में निकलने वाले 6 भव्य रथों को झंडी दिखाकर रवानगी दी।

प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान का जो यह सामाजिक उत्थान का यह प्रयास सराहनीय है। इससे राजस्थान के हर जिले लोग लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि यह पहला अवसर है जब कोई आध्यात्मिक संस्थान इतने बड़े पैमाने पर सामाजिक विकास के काम का वीड़ा उठाया है। खचाखच भरे सुश्रुत सभागार में परिवहन मंत्री ने कहा कि राजस्थान सरकार इस अभियान में पूर्ण सहयोगी रहेगी। साथ ही सभी अधिकारियों को निर्देशित किया जायेगा कि इस अभियान को सफल बनाने में पूरा सहयोग करें। इस मौके पर सूबे के मुख्यमंत्री अशोक गहलौत द्वारा भेजे गये अभियान की सफलता का शुभकामना संदेश भी पढ़कर सुनाया गया।

अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष जसबीर सिंह, स्कील विश्वविद्यालय के कुलपति ललित पंवार ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर डॉ. सतीष गुप्ता, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ बनारसी, सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत, राजपार्क सबजोन प्रभारी बीके पूनम, अजमेर की प्रभारी बीके शान्ता, ब्रह्माकुमारीज संस्थान के पीआरओ बीके कोमल, सोशल एक्टिविटी ग्रुप के सचिव बीके भानू, बीके मोहन, सचिन, अमरदीप समेत कई लोग उपस्थित थे।

इन विषयों पर चलेगा अभियान: जल संरक्षण, उर्जा संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति, स्वच्छता, शाश्वत जैविक और यौगिक खेती, खुशहॉल जीवन, ह्दयरोग के कारण और उसका निवारण, तनावमुक्ति आदि विषयों पर कार्यक्रमों का आयोजन होगा। यह अभियान 22 सितम्बर तक राजस्थान के 33 जिलों में जायेगा। प्रत्येक दिन में सभी अभियान 60 विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे।

जयपुर से इन रुटों के लिए निकले अभियान

जयपुर से अलवर, बीकानेर, बाड़मेर, डूंगरपुर, उदयपुर, माउण्ट आबू स्थानों के लिए 6 रथाभियान जायेंगें। प्रत्येक रथ में 18 लोगों की टीम है। जो 20 दिनों तक इस अभियान में संलग्न रहेगी।

24 को समापन आबू रोड में

इस अभियान का समापन 24 सितंबर को ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में समापन होगा। जिसके उपलक्ष्य में एक संमेलन का आयोजन होगा। इसमें अभियान यात्रियों को संमानित किया जायेगा।

मैराथन दौड़

भारत सहित कई देशों के शामिल हुए दो हजार प्रतिभागी

दुनिया की पहली इको फ्रेंडली अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन में उमड़ा सैलाब, 1 घंटा 19 मिनट में नापी 21 किमी की दूरी

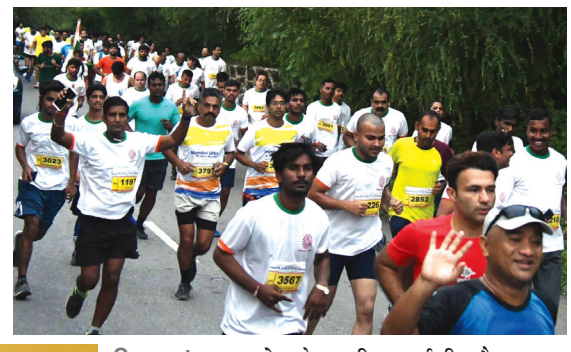

शिव आमंत्रण प्रदेश के दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन का दर्जा प्राप्त दादी प्रकाशमणि अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन में धावकों का सैलाब उमड़ पड़ा। प्रातः काल से ही धावकों का जमावड़ा लग गया। मौसम का मिजाज भी अंतराष्ट्रीय मैराथन की अनुकूल था। इस अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन का उदघाटन करने पहुंची जिला प्रमुख पायल परसराम पुरिया ने कहा कि यहां की मैराथन पूरे विश्व में एक इतिहास बनायेगी क्योंकि यह पहली अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन है जिसमें प्लास्टिक का बिल्कुल उपयोग नहीं किया गया है। इससे आने वाले पर्यटकों के लिए एक अच्छा संदेश जायेगा। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान पिछले पांच वर्षो से यह आयोजन कर रहा है। इसमें हजारों लोग प्रतिवर्ष शामिल होते हैं। संस्थान का यह प्रयास निश्चित तौर पर सदभावना और विश्व बन्धुत्व का संचार होगा। राजस्थान के पूर्व मुख्य उप सचेतक तथा कांग्रेस नेता रतन देवासी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन का दर्जा प्राप्त हुआ है। यह माउण्ट आबू तथा प्रदेश के लोगों के लिए गौरव की बात है। सुप्रसिद्ध गुजराती फिल्म अभिनेत्री पल्लवी पाटिल ने कहा कि मैं तो सामान्य तौर पर फिल्मों की दुनिया में रहती हूं। लेकिन आज इस आयोजन में शामिल होकर एक नयी उर्जा मिली है। इससे ही समाज के युवाओं में एक जोश आयेगा। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने भी अपनी शुभकामनाएं देते हुए मैराथन में सफलता के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में आये नगरपालिका माउण्ट आबू के चेयरमैन सुरेश थिंगर तथा आबू रोड पालिका के चेयरमैन सुरेश सिंदल ने कहा कि यह ऐतिहासिक दिन है। यह मैराथन अब अन्तर्राष्ट्रीय मैराथन के नाम से जानी जायेगी और दुनिया भर के धावक भाग लेंगे। पूर्व चैम्पियन धावक सुनिता गोदारा, समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

पेज एक का शेष... कन्या छात्रावास

छात्रावास से निकले अंतरराष्ट्रीय वक्ता

चूंकि छात्रावास में मुख्य रूप से पढ़ाई के साथ आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। छात्राओं को भाषण कला का ज्ञान प्रैक्टिकल में दिया जाता है। एक दिन पहले छात्रा को विषय दिया जाता है फिर वह उस विषय पर मंच भाषण देना होता है। इसमें मंच संचालन से लेकर मोटिवेशनल स्पीच शामिल होती है। यही कारण है कि यहां से पढ़ाई करके निकलीं छात्राओं में ज्यादातर अच्छी मोटिवेशनल स्पीकर, कोच और जीवन प्रबंधन गाइड हैं। कई छात्राएं विदेश में भी अपनी प्रतिभा दिखा रही हैं। छात्रावास का पूरा माहौल आध्यात्म से ओतप्रोत है। शक्ति निकेतन छात्रावास का पूरा प्रबंधन बहनों के हाथ में है। जहां आज के युग में दो बच्चों की परवरिश करना मुश्किल काम है वहीं यहां प्रेम-स्नेह के साथ 150 बच्चियों की परवरिश की जाती है। साथ ही इनमें नैतिकता एवं चरित्रता का पाठ भी सिखाया जाता है। नई छात्राओं के प्रवेश के लिए जनवरी से मई तक संपर्क कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया मई, जून से ही प्रारंभ हो जाती है।

समूह बनाकर सौंपी जाती है जिम्मेदारी

छात्राओं के संपूर्ण विकास के लिए उन्हें पढ़ाई के साथ दैनिक जीवन के कार्य भी सिखाए जाते हैं। इसके लिए छात्राओं के समूह बनाकर उन्हें साफ-सफाई करना, भोजन बनाना, सब्जी काटना, रोटी बनाना आदि की जिम्मेदारी विभिन्न समूह में सौंपी जाती है। प्रत्येक छात्रा के लिए कम से कम एक घंटा समूह में सेवा कार्य करना अनिवार्य है। इससे शक्ति निकेतन के रखरखाव, साज-सज्जा, सफाई एवं भंडारे से संबंधित सभी कार्यसफलता पूर्वक संचालित होते रहते हैं। इसके अलावा छात्राओं को टीचर्स द्वारा कम्प्यूटर, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पेटिंग, संगीत, गृह सज्जा, आवासीय रखरखाव, मेहमान नवाजी, पाक-कला आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

ये है छात्रावास की दिनचर्या...

4 बजे अलसुबह राजयोग मेडिटेशन के साथ दिन की शुरुआत
4.30 बजे से अध्ययन, व्यायाम, नित्य-कर्म
6 बजे से सामूहिक सत्संग, 8 से 9 बजे से तक नाश्ता
10 बजे से 4 बजे तक स्कूल, 5 बजे स्वल्पाहार, चाय, आराम
6 बजे से खेलकूद, दैनिक व ईश्वरीय सेवा कार्य
7 से 7.30 बजे तक सामूहिक राजयोग मेडिटेशन
7.30 बजे से सभी का दैनिक चार्ट लिया जाता है। 8 बजे से रात्रि भोजन
8 से 10 बजे तक स्वाध्याय, अध्ययन

भाषण कला सीखना महाआनंद से कम नहीं था..

वर्ष 1985 से 1991 तक 7 वर्ष शक्ति निकेतन में पढ़ाई के साथ आध्यात्म, अनुशासन और जीवन प्रबंधन की शिक्षा से मेरी जीवन को एक नई दिशा मिली। इंदौर हॉस्टल का समय मेरे जीवन का स्वर्णिम काल था। माता-पिता की इकलौती बेटी होने से मैं नाजुक स्वभाव की थी। इसके बावजूद मुझे वहां रहने में जरा भी तकलीफ नहीं हुई। क्योंकि वहां ममता और प्यार की पालना मिलती रही। यही अनुभव होता था कि यही मेरा सच्चा परिवार है। कदम-कदम पर बड़ी दीदियों की शिक्षाओं और मार्गदर्शन से आज मैं इस योग्य बनी हूं। हॉस्टल में सुबह जल्दी उठने से लेकर हर काम जिम्मेवारीपूर्वक करना पड़ता है। रात में सोने से पहले दीदी से मिलना, सत्यता के गुण भरना, पढ़ाई के प्रति एकाग्र होना और बर्तन साफ करना से लेकर निर्भीकतापूर्वक भाषण करने की कला सीखना किसी महाआनंद से कम नहीं था।

बीके संगीता, मोटिवेशनल स्पीकर व राजयोग मेडिटेशन शिक्षिका, बोरीवली, मुंबई (पूर्व छात्रा शक्ति निकेतन)

आध्यात्मिक वातावरण से बदल गया जीवन

मैं 1993 में 11वीं कक्षा में छात्रावास में आई थी। यहां का वातावरण बिल्कुल अलौकिक था। दीदियों की प्रेरणादायी क्लास और योगाभ्यास कराने का तरीका बहुत ही गहन व हृदय परिवर्तन करने वाला था। यहां रहकर मेरी आध्यात्म में दिनोंदिन रुचि बढ़ती गई। इस दौरान मैंने पढ़ाई पढ़ते हुए योग की कई अनुभूतियां की। यहां की दिनचर्या और आध्यात्मिक वातावरण से स्वत: मेरे जीवन में बदलाव आ गया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं ब्रह्माकुमारी बनूंगी। परमात्मा को पाने की कशिश और समाज के लिए कुछ करने के भाव से मैंने स्वयं फैसला किया कि ब्रह्माकुमारी बनना है। हॉस्टल में लव व लॉ का बैलेंस देखा। भाषण करना सीखा, धीरे-धीरे यहां के सुरक्षित अलौकिक वातावरण ने मुझे वो जीवन दिया जो आज निर्विघ्न ब्रह्माकुमारी बने 24 वर्ष हो गए हैं।

बीके अंबिका, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, इंदौर, मप्र (पूर्व छात्रा)

यहां की डिग्री है सत्यता-ईमानदारी

मुझे यहां आए दो साल हो गए हैं। मैं कितनी भाग्यशाली हूं कि मुझ कली को इस गार्डन में पलने का अवसर मिला। जिस दिन से मैंने यहां कदम रखा उस दिन से मेरे बुरे संस्कारों रूपी कांटे ना जाने कब खत्म हो गए। मैं मुरझाई हुई कली से प्यारी फूल बन गई। घर में संस्कार थे जैसे झूठ बोलना, बड़ों के साथ अच्छे से व्यवहार ना करना, टीवी देखना, फालतू बातों में समय बर्बाद करना, गुस्सा करना, लड़ाई-झगड़ा करना ये सब चीजें इतनी जल्दी बदल गईं। यहां पर बहनों का इतना प्यार मिलता है कि वो हमारी हर कदम पर ध्यान देती हैं, कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे इतना ज्यादा प्यार करने वाला कोई मिलेगा। पर यहां आकर मेरी सारी ख्वाहिशें पूरी हो गईं। यहां की डिग्री 60 फीसदी, 90 फीसदी अंक नहीं बल्कि सत्यता, ईमानदारी, वफादारी है जिसे हासिल करना माना इस दुनिया की सबसे बड़ी डिग्री हासिल करना है।

खुशबू मौर्य, छात्रा, कक्षा 9वीं, शक्ति निकेतन छात्रावास

छात्रावास में प्रवेश के लिए संपर्क करें.....

शक्ति निकेतन, ओम शांति भवन, ज्ञान शिखर, गेट नंबर-2, न्यू पलासिया, इन्दौर-452001 (मप्र) मोबाइल- 62601-77249, 94253-16843, 94259-03328

बीके संतोष, बीके हेमलता, बीके गोपी वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस से सम्मानित

शिव आमंत्रण इंदौर। इंदौर में अल्मा नेशनल एक्सीलेंस अवार्ड व वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस, लंदन के द्वारा देश की शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक विकास में संस्थागत व व्यक्तिगत योगदान देने वाले 28 राज्यों की 200 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस सम्मान के उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना ज़ोन की निदेशिका बीके संतोष को भी अवार्ड के लिए चूना गया था। उनकि अनुपस्थिति में इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रिय समन्वयक बीके हेमलता ने उनकी जगह यह सम्मानपत्र प्राप्त किया। सम्मान समारोह में वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस, लंदन के माध्यम से विश्वस्तर पर रिकार्ड बनाने एवं शामिल किए जाने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए, इसी कड़ी में आंध्रप्रदेश पुट्टपर्ति की प्रभारी बीके लक्ष्मी एवं बीके गोपी को पुट्टपर्ति में शिवलिंग के आकार का बिगेस्ट म्यूज़ियम बनाने के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। इस समारोह में चेम्बर ऑफ इंडस्ट्री, फेडरेशन ऑफ नेपाल की प्रेज़िडेन्ट भवानी राणा, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन के अध्यक्ष डॉ. दिवाकर सुकुल, इंदौर के सांसद शंकर लालवानी, विधायक संजय शुक्ला, वरिष्ठ

आदर्श शिक्षा रत्न उपाधि से बीके शांता सम्मानित

शिव आमंत्रण मथुरा/उप्र। आदर्श युवा समिति की परियोजना आदर्श संस्कारशाला द्वारा यूपी के हाथरस में आनंदपुरी कॉलोनी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शांता को 'आदर्श शिक्षा र|' उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में खासतौर पर मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान के तहत प्रशंसनीय सेवाओं के लिए दिया गया। बीके शान्ता को शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में खासतौर पर ''मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान'' तथा किशोरवय बच्चों के लिए टच द लाइट कार्य' में में सेवाओं के लिए 2019 के लिए आदर्श शिक्षा रत्न की उपाधि से मथुरा के आर.सी. गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित एक समारोह में उत्तर प्रदेश राज्य बाल आयोग के अध्यक्ष डॉ. विशेष गुप्ता द्वारा कार्य' म संयोजक दीपक गोस्वामी, सुमन गोस्वामी सह

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 110 रुपए
तीन वर्ष 330
आजीवन 2500 रुपए

दादी प्रकाशमणि की पुण्य तिथि पर उमड़ा जन सैलाब, कतार बद्ध होकर पुष्पांजलि

हजारों लोगों ने श्रद्धांजलि देकर की विश्व बन्धुत्व की कामना

शिव आमंत्रण आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 12वीं पुण्य तिथि पर हजारों लोगों ने प्रकाश स्तम्भ पर पुष्पांजलि अर्पित कर विश्व बन्धुत्व की कामना की। इस अवसर पर प्रातः काल से ही ध्यान प्रार्थना का दौर चलता रहा। अल सुबह से ध्यान और मेडिटेशन कर विश्व बन्धुत्व की कामना की गयी। पूरे शांतिवन परिसर में 15 हजार से ज्यादा लोगों के होने के बाद भी पूरा परिसर शांति की दुनिया में तब्दील था।

इसके बाद प्रातः 8 बजे ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ईशू दादी समेत सभी वरिष्ठ लोगों ने प्रकाश स्तम्भ पर थोड़े समय मौन रहकर श्रद्धांजलि दी। ईशू दादी ने कहा कि दादी का जीवन मानवता की सेवा के लिए था। वे हमेशा दूसरों के लिए प्रयासरत रही। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज संस्थान की कार्यक्रम प्रबन्धिका तथा पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की पूर्व व्यक्तिगत सचिव राजयोगिनी बीके मुन्नी ने दादी के संग के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि दादी के हर कर्म और बोल में मानवता के कल्याण का संकल्प रहता था। उनके लिए चाहे छोटा हो या बड़ा हर कोई अपना समझता था। उनका जीवन विश्व कल्याण के लिए समर्पित था। दादी ने पूरे विश्व में नारी शक्ति की मिसाल कायम की।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्था के महासचिव बीके निर्वेर ने कहा कि दादी एक यूनिवर्सल माँ थी। वे जहाँ भी जाती थी वहाँ हर कोई उनका हो जाता था। इसलिए आज भी उनकी यादें लोगों के जेहन में ताजा हो जाती है। हमें दादी के संकल्पों को पूरा करने का संकल्प करना चाहिए। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा ने कहा कि दादी आध्यात्मिकता की अति उंचाईयों को छू चुकी थी। उनके सामने जाने से ही आत्म दर्शन होने लगता था।

कार्यक्रम में महाराष्ट्र एवं तेलंगाना जोन प्रभारी बीके संतोष दीदी ने कहा कि हमने दादी के साथ बचपन के दिन भी देखे हैं। उनके हर कर्म प्रेरणादायी होते थे। उनके कर्म में मानवता का पाठ था। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, शांतिवन प्रबन्धक बीके भूपाल, सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत, अम्बावाड़ी सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शारदा, गॉडलीवुड स्टूडियो के कार्यकारी

शांतिवन — सूचना और प्रोद्योगिकी व्यवसायियों के सम्मेलन में चर्चा

आंतरिक ज्ञान से बढ़ेगा परस्पर सामंजस्यः -पांचाल

कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि सभा में उपस्थित लोग।

शिव आमंत्रण आबू रोड। एमएनसी कम्पनी के आईटी प्रमुख भावेश पंचाल ने कहा कि जिस तरह से सूचनाओं का तंत्र बढ़ता जा रहा है। इससे मनुष्य दिग्भ्रमित हो रहा है। जब चारों ओर से सूचनाओं का अंबार हो तो सही मार्ग दर्शन करना भी सूचना प्रौद्योगिकी की जिम्मेवारी बनती है। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में आईटी व्यवसायियों के लिए आयोजित सम्मेलन में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज हर बच्चे के हाथ में मोबाईल है और देश और दुनिया की विभिन्न सूचनाओं से वाकिफ है। इसलिए उसे सही और गलत सूचनाओं के बारे में भी ज्ञान होना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज संस्थान इस क्षेत्र में सराहनीय प्रयास कर रही है। क्योंकि हर वर्ग के लोगों को जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले कंटेट लगातार उपलब्ध करा रही है।

कार्यक्रम में मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा ने कहा कि आज के युवा पीढ़ी को सही राह दिखाना कठिन हो गया है क्योंकि वह सूचनाओं के ढेर पर बैठा है। कब किस तरह सूचना उसे उसका दिशा मोड़ देगी यह कहना मुश्किल होगा।

कुवैत से आये लेखिका तथा समाजसेवी तथा लेखिका बीके अरुणा लाडवा ने कहा कि अब सोशल मीडिया से सबकुछ आसान हो जायेगा। यह मेरी व्यक्तिगत राय है कि अनाथ बच्चों को पालना सहज नहीं है। आईटी प्रभाग के मुख्यालय कोऑर्डिनेटर बीके यशवन्त पाटिल ने कहा कि जितनी सूचनायें उतना ही तनाव में इजाफा होने का कारण है। झारखंड संचार नेटवर्क लिमिटेड के निर्देशक डॉ.उमेश प्रसाद साह ने अभिवादन करते हुए कहा कि यहाँ आने के बाद महसूस हो रहा है कि आंतरिक सूचना तंत्र मजबूत होने से ही हम दुनिया के सभी चीजों को अपने उपर पड़ने वाले प्रभावों से बचा सकेंगे। क्योंकि इससे मन और बुद्धि का विकास होता है।

स्व प्रबंधन

सृष्टि-चक्र में वर्तमान समय रावण राज्य कलयुग का अंत

बीके ऊषा, स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

शास्त्रों के अनुसार कलियुग का अन्त तब समझना चाहिये जब चार कुओं को एक कुएँ का पानी भर सकता है लेकिन चार कुएँ मिल कर एक कुएँ को भर नहीं सकते। ऐसा समय जब आए तब समझना चाहिये कि कलियुग अपनी अन्तिम साँसें गिन रहा है। मनुष्य सोचता है चार कुओं को एक कुआँ भर सकता है, तो क्या चार कुएँ मिलकर एक कुएँ को पानी से भरपुर नहीं कर सकते? यह बात किसी जड़ कुएँ की नहीं है। चैतन्य कुओं की बात है।

आज एक माता-पिता चार बेटों के कुएँ को अपने कुएँ के पानी से यानि जितना धन होगा उतने में से पाल पोस कर बड़ा करेंगें,शादी कराके ,काम धंधे पर या बिजनेस में लगा देंगें। लेकिन क्या वे चार बेटे उस एका पिता की आवश्यकताओं को अपने बलबूते पर सम्पन्न कर पाते हैं? जब ऐसा मौका आता है तब वे बंटवारा करके बारी बांध लेते हैं कि मात-पिता तीन-तीन मास हर एक के साथ रहेंगें। अगर वैसे नहीं होता तो उनके लिए वृद्धाश्रम खोज लेते हैं। यह है आज के समाज की हालत जबकि चार कुएँ मिलकर भी एक कुएँ को नहीं भर सकते। अगर समय ऐसा नहीं होता तो आज मदर टेरेसा ,संत मदर टेरेसा क्यों बन जाती?

''मदर टेरेसा (Mother teresa) के जीवन का मोह,क्या था? वे तो एक सामान्य सिस्टर टेरेसा, एक मिशनरी स्कूल चला रहीं थी। फिर यह सिस्टर टेरेसा मदर टेरेसा कैसे बनीं? कहा जाता है एक दिन सुबह वे अपनी कुछ बहनों के साथ प्रातः काल की सैर कर रही थी। चलते-चलते उन्हें बहुत दर्दभरी कराहने की आवाज सुनाई दी। वे चारों ओर देखने लगीं लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया।बहुत ही दर्द भरी कराहने की आवाज अभी भी सुनाई दे रही थी। उन्होंने आवाज की दिशा में जाकर देखा कि एक कचरे के डिब्बे में एक आदमी कराह रहा था। वह कुष्ठ रोगी था। वह इस तरह से उस किचड़े के डिब्बे में पड़ा था जो हिल भी नहीं पा रहा था। उसके शरीर को चूहे नोंच रहे थे इसलिए वह दर्द से कराह रहा था क्योंकि और कोई उपाय ही नहीं था। मदर टेरेसा का हृदय विदीर्ण हो गया। उन्होंने उस व्यक्ति को बाहर निकाला और पूछा,'तुम अन्दर कैसे गये।' उस व्यक्ति ने रोते हुए कहाकि 'इस बीमारी के कारण जिन्दगी भर मैंने दुःख देखा लेकिन मुझसे मेरे बच्चे भी तंग हो गए,कल रात मेरे बेटे ने मुझे इस कूड़े के डिब्बे में फैंक दिया और कहा कि यहाँ मर जा बूढे, मरता भी नहीं है। मौत भी कैसी है? चूहों ने आधा शरीर का हिस्सा खा लिया फिर भी मुझे मौत नहीं आ रही है।' ऐसा कहकर वह और भी दर्द से रोने लगा।

मदर टेरेसा का हृदय द्रवित हो गया। उसने यह संकल्प लिया कि आज के बाद मेरा यह जीवन इन कुष्ठ रोगियों के लिए ही रहेगा। जब उन्होंने यह बात अपने समाज वालो से कि तो समाज ने इस बात का विरोध किया। उन्होंने अपना वह समाज छोड़ दिया और अपनी एक नई संस्था बनाकर यह संकल्प लिया कि आज के बाद मेरा जीवन इसी सेवा के लिए समर्पित रहेगा। वह व्यक्ति तो अधिक समय जिन्दा नहीं रहा। लेकिन मरते वक्त उसने एक अच्छी लाइन कही किः 'जिन्दगी भर मैं दुःख के हाथो में पला, लेकिन आज सुख के हाथ मैं मर रहा हूँ। इससे मुझे विश्वास हो रहा है कि मेरा आगे का जन्म सुखी होगा।' तात्पर्य यह है कि आज वह समय आ गया है कि जब बच्चे माता-पिता को कचरे के डिब्बे में फैंक सकते हैं। इससे ज्यादा कलियुग क्या देखना चाहते हैं? क्या यह कलियुग की अति नहीं है? कलियुग का और कौन सा रूप देखने के लिए लालायित है? इसलिए अब कलियुग बच्चा नहीं है लेकिन थोड़ा सा बचा। अब वह अपनी अंतिम सांसे गिन रहा है।

कई लोग यह प्रश्न करते हैं कि अब कलियुग के कितने साल बाकी हैं?'' कालचक्र की अवधि का ज्ञान परमात्मा संगमयुग (वर्तमान समय)पर देते हैं लेकिन इसके अंत की तिथि नहीं बताते है कि कलियुग कब पूरा हो रहा है क्योंकि मान लो आज किसी व्यक्ति को कहा जाय कि तेरे जीवन के केवल 24घंटे शेष हैं तुम जितना चाहो उतना भगवान को याद कर लो। तो क्या वह भगवान को याद कर सकेगा?क्योंकि तब वह टाइम कॉन्शयस हो जायेगा। एक-एक घड़ी बीतने के साथ उसका ध्यान मौत की घड़ी पर टिक जायेगा। वह अपने मन को भगवान की याद में एकाग्र नहीं कर पायेगा। **क्रमशः....**

रामगढ़ केंट बीके आशा डीसी संदीप सिंह को रक्षासूत्र बांधकर ईश्वरीय संदेश दिया।

कंकड़बाग पटना श्री कपीलदेव कामत को रक्षाबंधन का सूत्र बांधती हुई बीके काजल एवं बीके ज्योज्सना।

डालटनगंज कमिश्नर श्री मनोज कुमार झा को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके बंसती।

मोकामा इंस्पेक्टर सह थाना अध्यक्ष श्री राजनंदन शर्मा को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके निशा।

बाढ़ उपजेल सुपरिटेंडेंट श्री को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके बहनें।

मरहौरा एसडीओ श्री विनोद तिवारी को रक्षासूत्र बांधने के बाद ईश्वरीय संदेश देती हुई बीके आराधना।

छपरा कमांडेंट ऑफ आईटीबीपी श्री मनवन सिंह को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके अनामिका।

औरंगाबाद एसपी दीपक वर्णवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके सविता।

झूमरी तलैया बीएसएनएल के जीएम श्री एसके चौरसिया एवं उनके साथियों को रक्षासूत्र बांधने पश्चात बीके बीके लक्ष्मी।

समस्तीपुर एसपी विकास बर्मन को रक्षासूत्र बांधती हुई बीके सविता एवं साथ में बीके कृष्ण।

गुमला डीसी श्री रंजन को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके शांति।

समस्या समाधान

राजयोग परमात्मा से बात करने की एक विधि है

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

राजयोग परमात्मा से मिलन मनाने की विधि है। यह भगवान को खोजने का मार्ग नहीं, प्रभु मिलन की गहन अनुभूति का मार्ग है और हम इस योग के अभ्यास से इनर जर्नी की तरफ भी चलेंगे। आज के युग में इंफॉर्मेशन तो बहुत ज्यादा है, सोशल मीडिया ने तो वाक्य में कुछ छिपने नहीं दिया लेकिन सच्चा ज्ञान, व्हिज्डम, डिग्निटी समाप्त होती गई। एक प्रोफेसर से मुलाकात हुई उससे पूछा कि आपकी यूनिवर्सिटी में एजुकेशन का क्या हाल है तो उन्होंने जवाब दिया कि एजुकेशन नहीं कहेंगे हम, यह सिर्फ इनफॉरमेशन है। मनुष्य को एजुकेट नहीं किया जा रहा, केवल इंफॉर्मेशन दी जा रही है इसलिए एजुकेशन बहुत बढ़ने के साथ-साथ समस्याएं भी बहुत बढ़ गई हैं।

खुद से एक मिनट गहराई से बात करें

जिस चीज पर हम चर्चा कर रहे उससे हमारी इनर विजडम बढ़े, इनर प्योरिटी बढ़े, हमारे विचारों में शुद्धिकरण आए और हम फिर से अपनी उस सुंदर अवस्था को पहुंच जाए जिसमें बहुत सुख है, बहुत सफलता है, जिसमें प्रेम है, शांति है, अपनापन भी है। हमें रियल विजडम की तरफ चलना है तो बाकी सब विजडम स्वतः ही प्राप्त हो जाएंगे, इसके लिए हमें भगवान से अपने को जोड़ना है। क्या लगता है वह हमारा है? खुद से एक मिनट गहराई से बात करें कि जो भगवान है वह मेरा परमपिता है, इसका अर्थ है वह मेरा है। हमने उसको भगवान और अपने को भक्त बना बहुत दूर कर दिया है। परंतु वह मेरा है, ऐसी ही सुंदर एहसास में सबको आना है, इससे बहुत चीजें सहज हो जाएंगी।

जो अपने होते उस पर हमारा अधिकार होता

जब वह परमात्मा हमारा है तो उसका सब कुछ मेरा है जो अपने होते हैं उन पर हमारा अधिकार रहता है जैसा कि हमारे बच्चे उसी तरह जो भगवान है वो मेरा परमपिता है उस पर भी हमारा अधिकार है अगर इस अनुभूति तक आप पहुंच जाएंगे तो आपकी जीवन की यात्रा आनंदमई बन जाएगी, समस्याएं आने का साहस नहीं करेंगी। आप विघ्नों को नष्ट करने वाले विघ्न विनाशक गणेश समान बन जाएंगे, उस परमात्मा पर हमारा अधिकार है तो जो उसका है वह सब मेरा है। वो प्यार का सागर है वह प्यार अपने बच्चों को देगा। इसका अनुभव हमें राजयोग अभ्यास में होगा। उसका प्यार अनकंडीशनल लव है। वह सबको प्यार की दृष्टि से देखता है चाहे कोई कैसा भी होगा वह शांति का सागर है तो उसकी शांति भी हमारे लिए है वह सर्वशक्तिमान है। अब सोचिए जब वह हमारा पिता है तो यह नेचुरल रिश्ता होना चाहिए कि उसका और हमारा मिलन हो। अगर वह हमें कभी मिलता ही ना होता तो उससे मिलने की इच्छा ही क्यों होती? उससे मिलने की इच्छा होती है भले ही आप उसके लिए कुछ सोचते नहीं हैं परंतु सबकॉन्शियस माइंड में भरा रहता है।

अब इसको दूसरे तरीके से देखिए। बहुत महिमा है उसकी वह ज्ञान का सागर है प्रेम का सागर है शांति का सागर है महिमा तब ही होती है जब कोई बहुत काम करता है उस तरह के। कोई बहुत बड़ा आदमी है संसार में लेकिन वह अपने घर में है कुछ नहीं करता है बहुत पढ़ा लिखा है लेकिन कुछ करता नहीं है कोई उसकी महिमा गाएगा। कोई जानेगा भी नहीं। कोई कुछ करता है गायन उसका ही होता है। उसने सुख दिया है इसलिए उसको सुखदाता कहते हैं तो हमें उससे जुड़ जाना है उसके मिलन की सुखद अनुभूतियां करनी है।रोज सवेरे परमात्मा से मिलन बनाया जा सकता है और अगर कोई बहुत अच्छा योग अभ्यास कर ले तो जब चाहे मिलन मनाया जा सकता है। सारे दिन में 100 बार भी मना सकते हैं और उस मिलन की अनुभूति आपको यकीन दिलाएगी कि मिलन हो गया जैसे मीठा कुछ खाने से हमें सोचना नहीं पड़ता कि मीठा था क्या उसकी मिठास स्वता ही बताती है कि मीठा खाया है।

भगवान से मिलन.....यह तर्कों का विषय नहीं है यह अनुभूतियों का विषय है तो इस मिलन की और हम चलेंगे पहले इनर जर्नी सभी अपने अंदर जाकर देखेंगे कि मैंने अपना इनर वर्ल्ड कैसा बनाया है एक यह बाहर का संसार है एक अंदर का अपना संसार है वह अंदर का संसार मेरा कैसा है उसमें मैंने सबके लिए प्रेम भरा है? सदभावनाए भरी हैं? या नफरत भरी है बदले की भावना भरी है? या सुख देने की भावना भरी है, ईर्ष्या द्वेष भरा है या आगे बढ़ाने की भावना भरी है। हमारा अंदरूनी संसार कैसा है अंदर क्रोध की अग्नि जल रही है या शांति की शीतल छाया है सब चेक करेंगे। हम जानते हैं आत्मा में 7 गुण होते हैं सुख शांति आनंद प्रेम शक्ति पवित्रता ज्ञान हमें उन को स्वीकार करना है मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं, शांति मेरे नेचर है स्वीकार करें अपने अंदर भेज दे यह सच है मेरा मूल गुण शांति है क्रोध नहीं ऐसे ही दूसरे सभी गुणों को भी स्वीकार करेंगे।

पटना उपमुख्यमंत्री श्री सुशील मोदी को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके अनिता।

बोरिंग रोड यूनियन मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके बहनें।

रांची झारखंड के मुख्यमंत्री श्री रघुवरदास जी को राखी बांधते हुए बीके निर्मला।

जहानाबाद बिहार सरकार में शिक्षामंत्री श्री कृष्णनंदन रक्षासूत्र बांधती हुई बीके बीके निशा।

शिवहर एसपी संतोष कुमार को राखी बांधती हुई बीके भारती।

गया बीके शीला सिटी डीएसपी राजकुमार रक्षासूत्र बांधते हुए।

अरेराज आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह साथ में बीके मीना।

बरौनी इंडियन ऑयल कॉपोरेशन द्वारा खुशनुमा जिंदगी जीने का सरल तरीका का आयोजन मुंबई के वक्ताओं द्वारा सफल रहा, बीके कृष्ण एवं बीके आशा मौजुद रहीं।

बलिया/बेगूसराय सेवाकेंद्र से झांकी निकाल कर ईश्वरीय संदेश देते हुए बीके विभा, बीके राजऋषि, बीके लालो एवं अन्य।

मेडिटेशन जैसी अद्भुत कला को समझेंगे तो हर हाल में सदा रहेंगे खुशहाल

सीआरपीएफ अधिकारी एवम् जवानों को संबोधित करते बीके सविता

शिव आमंत्रण ➤ नीमच/मप्र। सीआरपीएफ डायरेक्टरेट, दिल्ली के निर्देशानुसार आर.टी.सी विंग द्वारा चलाए जा रहे मेडिकल फिटनेस के दृष्टिकोण से अधिकारियों एवं जवानों के प्रोत्साहन एवं मनोबल बढ़ाने हेतु मध्यप्रदेश में ब्रह्माकुमारीज् के नीमच सेवाकेंद्र के विशाल सद्भावना सभागार में मोटिवेशनल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सबजोन प्रभारी बीके सविता ने आत्म रक्षा से राष्ट्र रक्षा का महत्व समझाते हुए कहा कि यदि सही मार्गदर्शन पाकर हम मेडिटेशन जैसी अद्भुत कला को समझ सकें तो अहो सौभाग्य। फिर तो हर हाल में सदा खुशहाल ही रहेंगे। यदि स्व में निहित चैतन्य शक्ति आत्मा का तार सर्वशक्तिमान परमात्मा से जोड़कर हम स्वरक्षा के साथ समाज एवं राष्ट्र की भी रक्षा कर सकते हैं। सभी जवानों के कलाई ईश्वर प्रदत्त रक्षाबंधन का महत्व समझाते राखी बांधी तो वही जवानों ने अपनी उन्नति में बाधक अपने अंदर की एक कमजोरी को अर्पण करते हुए बीके बहनों का धन्यवाद व्यक्त किया।

मूल्य एवं आध्यात्म की डिग्री प्रदान की, मेधावियों का किया सम्मान

कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण ➤ नाशिक। ब्रह्माकुमारी संस्था के स्थानीय मुख्य सेवाकेंद्र प्रभुप्रसाद, दिंडोरी रोड, के सभागृह में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शहर के अलग अलग स्कूल एवं कॉलेज के टॉपर छात्रों को सम्मानित किया गया। यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के बीए मूल्य एवं आध्यात्म शिक्षण के विद्यार्थियों को डिग्री भी प्रदान की गई। बीके वासंती, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के संचालक डॉ. प्रवीण घोडेस्वार, मुंबई मलबार हिल मुम्बई के बिल्डर राजेन्द्र सांगले, साप्ताहिक नाशिक परिसर के संपादक दिलीप बोरसे, संचालक प्रकाश बोरसे, विद्यापीठ के नोडल ऑफिसर विकास सालुंके, बीके वीणा, बीके गोदावरी, बीके मनीषा, बीके ज्योति आदि उपस्थित थे।

जरूरतमंदों की सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य : शारदा

कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण ➤ अजमेर। ब्रह्माकुमारीज संस्था के अजमेर रिट्रीट सेन्टर नवाब बेड़ा की ओर से सेठ भागचन्द की कोठी में अजमेर के समाजसेवियों के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी समाजसेवियों को मोमेंटों तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्था के महिला प्रभाग की राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर बीके शारदा ने कहा, कि आज जरूरत है कि समाज सेवा के प्रारूप को बदलने की। क्योंकि समाजसेवियों को एक ऐसे समाज बनाने का प्रयास करना चाहिए जहाँ किसी भी प्रकार की कोई असमानता ना हो। वे उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर रही थी।

उन्होंने कहा, कि कई बार हम दूसरों की मदद करते है लेकिन वे लोग इसका दुरूपयोग भी करते है। जिन लोगों के अन्दर असमानता का भाव हो, सामाजिक बुराईयां हो उसे भी निकालने का प्रयास करना चाहिए। जिससे स्थायी समाधान हो सके। ब्रह्माकुमारीज संस्थान मानव समाज की सेवा में सदा तत्पर है। इस अवसर पर जयपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी तथा उद्योगपति मदनलाल शर्मा ने अपने आध्यात्मिक और पारिवारिक जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए कहा, कि यदि हम परमात्मा के उपर जितना विश्वास रखेंगे उतना ही हमारा जीवन खुशहाल होगा और हमारा ध्यान परमात्मा रखेगा। जितना हम अपने उपर ही सब भार लेते है तो उतना ही परेशान होते हैं।

मुंबई : महाराष्ट्र के मलाड में फिल्म डाइरेक्टर सुभाष घई को रक्षासूत्र बांधते हुए बीके कृति।

लखनऊ: उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को आत्म स्मृति का तिलक लगाकर गोमती नगर सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके राधा ने रक्षा सूत्र बांधा।

हैदराबाद : आंध्रप्रदेश के उपमुख्यमंत्री अमजत बाशा को भी बीके बहनों ने रक्षासूत्र बांधकर मुख मीठा कराया।

नई दिल्ली : केंद्रीय पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन मंत्री गिरिराज सिंह को ईश्वरीय संदेश देकर राखी बांधते हुए बीके बबीता साथ में बीके फाल्गुनी।

अलबिदा डायबिटीज

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज का रिस्क स्कोर

डायबिटीज की बीमारी दिन प्रतिदिन जिस तरह से फैलती जा रही है, सचमुच आज यह एक गंभीर समस्या बन गई है। बच्चों से लेकर बुढ्ढे तक, अमीर से लेकर गरीब तक, हर आयु, हर वर्ग, चाहे स्त्री हो या पुरूष, आज हर कोई इस बीमारी से ग्रसित पाया जा रहा है। अब जिस रूप से यह बीमारी दिखाई दे रही है, कोई भी व्यक्ति यह कह नहीं सकता है कि मुझे डायबिटिज होगी ही नहीं। फिर हम सभी के लिए एक बहुत बड़ी खुश खबरी है कि यह एक संपूर्ण प्रतिरोध की जाने वाली (Totally Preventable) बीमारी है। यदि कोई व्यक्ति यह जान जाए कि कौन सी कारणों से (Risk Factors) डायबिटीज का होना संभव है, और वह थोड़ी सी सावधानी रखें, वह इस बीमारी से स्वयं को सुरक्षित रख सकता है।

डायबिटीज के Risk Factors **मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:-**

1 अपरिवर्तनीय (Non Modifiable)
2 परिवर्तनीय (Modifiable)

Non Modifiable Risk Factors (अपरिवर्तनीय डायबिटीज रिस्क फेक्टर)

Age(उम्र)

Family History (माता-पिता या किसी परिजनों को डायबिटीज की बीमारी होना)

(Modifiable Risk Factors) परिवर्तनशील रिस्क फेक्टर

Obesity (मोटापा)
Sedentary Lifestyle (निष्क्रिय जीवन शैली)
Stress & Tension (तनाव, दुश्चिन्ता)
Imbalanced Diet, Fast Food (असंतुलित आहार)
Chemicals, Pesticides (रासायनिक, कीट नाशक दवाईयां) आदि..।

विदेशी लोगों का खान-पान, शारीरिक गठन और जीवन शैली आदि अगर देखा जाय तो भारत के भेंट में बहुत ही भिन्न है इसलिए हमारे देश की स्थिति के अनुसार-कौन से व्यक्ति को डायबिटीज होने की संभावना है यह जानने के लिए एक रिस्क स्कोर (INDIAN DIABETES RISK SCORE) बनाया गया है। यह रिस्क स्कोर भारत के सुप्रसिद्ध डॉ वी.मोहन (Dr V. Mohan) और उनके साथी ने तैयार किये हैं, जिससे कोई भी व्यक्ति यह जान सकता है कि उसे डायबिटीज होने की कितनी संभावना है। तो आइए हम देखते हैं कि यह (INDIAN DIABETES RISK SCORE) क्या है? अगर कोई व्यक्ति अपना RISK SCORE जानना चाहता है तो उसे निम्न वर्णित 4 बातों के आधार से अपना SCORE देना पड़ेगा। और सभी SCORE के सम्मिश्रण से डायबिटीज होने की संभावना का आकलन कर सकता है। कुछ Risk Factors को तो हम बदल नहीं सकते हैं जैसे आयु और फैमली हिसट्री (Family History)। परंतु जो परिवर्तनीय Risk Factors है। (Waist size & Physical Activity) उसे भी अगर कोई बदल दे तो भी डायबिटीज होने का Risk बहुत ही कम हो जाता है।

यहां करें संपर्क

बीके जगजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

बीके शिवानी, सद्गुरु, स्वामी रामदेव और आचार्य लोकेश ने एक मंच से पर्यावरण संरक्षण संदेश

शिव आमंत्रण ➤ मुंबई। भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में पर्यावरण संरक्षण के लिए एक ऐतिहासिक आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अहिंसा विश्व भारती संगठन थ्ने एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक नेताओं सदुरु जग्गी वासुदेव, स्वामी रामदेव, आचार्य लोकेश, और बीके शिवानी ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और इसके लिए अभियान चलाया। इस अवसर पर प्रतिष्ठित पर्यावरणविदों, राजनीतिक नेताओं, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों, विचारकों और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। घटना में मौजूद हजारों लोग और इंटरनेट के माध्यम से घटना को देखने वाले 10 मिलियन (1 करोड़ से अधिक) लोगों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम दुनिया भर में आज तक 10 - करोड़ लोगों तक पहुंचा, जिसमें 90,000 पूर्व सैनिक भी पर्यावरण संरक्षण का संकल्प ले रहे थे। इस अवसर पर, आज सुबह मुंबई के एक अलग हिस्से में 5,000 पौधे लगाए गए।

जीवन की सुरक्षित यात्रा के लिए मन का संतुलन जरूरीः -रतन

शिव आमंत्रण आबूरोड। चाहे सड़क की यात्रा हो या जीवन की यात्रा दोनो में ही सुरक्षा महत्वपर्ण है। जीवन कीमती है इसलिए जीवन की सुरक्षा के लिए मन का संतुलन जरूरी है। उक्त उदगार रेलवे मंत्रालय भारत सरकार के पैसेन्जर सर्विस कमेटी के चेयरमैन रमेश चन्द्र रतन ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में यातायात एवं परिवहन प्रभाग की ओर से सड़क, सुरक्षा और आध्यात्मिकता विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम जल्दीबाजी में अपने मन का संतुलन खो देते है और फिर दुर्घटना में जान जान चली जाती है। इसलिए मन को शांत और संतुलित करना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है। यहाँ के बहनों का त्याग और समर्पण का मिसाल बहुत कम जगह देखने को मिलता है। जो कार्य सरकार को करनी चाहिए वह ब्रह्माकुमारीज संस्थान कर रहा है। कार्यक्रम में अजमेर डिविजन के डीआरएम राजेश कुमार कश्यप ने कहा कि अध्यात्म की परिभाषा जिसने समझ ली उसी दिन ही उसका कल्याण हो जायेगा। अध्यात्म का अर्थ आत्मा के अध्ययन से है। जिसके अन्दर अध्यात्म की लौ जगी हुई है। वह हर स्थान पर सुरक्षित होगा। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में राजयोग ध्यान की प्रक्रिया जिसके जीवन में होगी वह निश्चित तौर पर संतुलित और सुरक्षित होगा।

बीके बृजमोहन का स्वागत करते हुए बीके बहनें।

डेढ़ सौ दिन की योग तपस्या 'अब हम बदलेंगे' का प्रारंभ

दीप प्रज्ज्वलन से योग तपस्या 'अब हम बदलेंगे' कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण मध्यप्रदेश। राजगढ़ सेवाकेंद्र द्वारा संस्था की पूर्व प्रशासिका दादी प्रकाशमणी की 12 वीं पुण्यतिथि विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। साथ-साथ महात्मा गांधीजी की 150 वी वर्षगांठ के अवसर पर संस्था द्वारा डेढ़ सौ दिन की योग तपस्या 'अब हम बदलेंगे' कार्यक्रम का जिला शिक्षा अधिकारी बी. एस. बीसोरीया, जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री राशिद जमील खान, विधायक बापू सिंह तंवर, राजगढ़ जिला प्रभारी बीके मधु, सारंगपुर सेवाकेंद्र प्रभारी भाग्यलक्ष्मी, पचोर सेवा केंद्र प्रभारी बीके वैशाली, भूमि विकास बैंक के रिटायर्ड बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना, प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के. एन. गुप्ता द्वारा दीप जलाकर उद्घाटन किया गया। 25 अगस्त से शुरू किया गया यह कार्यक्रम 15 नवंबर तक चलेगा। इस अवसर पर सभी अतिथियों ने दादी प्रकाशमणि जी के कार्यों की सराहना करते हुए दादी जी को पुष्पांजलि अर्पित की। कु. समीक्षा और कु. शालू, कु. अमन और देवराज ने गीतों पर डांस प्रस्तुति दी। बीके मधु ने सभी अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया।

वह दिन दूर नहीं जब भारत पूरे विश्व का मार्गदर्शन करेगा

मेरा भारत अभियान में सभा को संबोधित करती सांसद सुनीता दुग्गल।

शिव आमंत्रण सिरसा। सिरसा की नवनिर्वाचित सांसद सुनीता दुग्गल ने कहा, हम सब परमात्मा के ही बच्चे है। अगर हमारे शासक अच्छे है और अगर आप को आध्यात्मिक रास्ते पर ले जानेवाली संस्थाएं है तो फिर बहोत जादा समय नही लगेगा कि हमारा भारत विश्वगुरू कहलायेगा और वह पूरे विश्व का मार्गदर्शन करेगा। ब्रह्माकुमारीज संस्था के युवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे अभियान मेरा भारत स्वर्णिम भारत के हरियाणा के सिरसा पहुंचने पर भव्य स्वागत हुआ, इस उपलक्ष्य में आनन्द सरोवर भवन में एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि के तौर पर सिरसा की नवनिर्वाचित सांसद सुनीता दुग्गल पहुंची। इस मौके पर युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके चंद्रिका, सिरसा के डिप्टी कमीश्नर अशोक गर्ग, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार राकेश वधवा, युवा भाजपा नेता मनीष सिंगला तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके बिंदु की उपस्थित रहे। सांसद सुनीता दुग्गल ने शुरूवात में सत्संग और सांसद के बारे में सभा को संबोधित करते हुए कहा, कि अभी हमारी बहन कह रही थी कि लोगों ने आप को पसंद किया तो आप को संसद मे भेजा और प्रभू ने आप को पसंद किया तो सत्संग में भेजा। लेकिन मै यह कहना चाहती हूं कि प्रभू ने पहले मुझे सत्संग में भेजा फिर सत्संग ने मुझे संसद में भेजा।

अभी भी साथ है, आगे भी रहेंगे राजधानी यहां ही स्थापन करेंगे

शिव आमंत्रण फरीदाबाद। सेक्टर-21 डी स्थित 'द सल्तनत बैंक्वेट हॉल' में विश्व शांति के लिए सामूहिक योग कार्यं म का आयोजन हुआ, जिसमें संस्था के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, हरिनगर सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बीके शुक्ला, दिल्ली के पांडव भवन की प्रभारी बीके पुष्पा समेत कई वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति में हज़ारों लोगों ने राजयोग ध्यान कर विश्व में शांति के बायब्रेशन दिए। मौके पर संस्था के अतिरिक्त महासचिव बीके ब्रजमोहन ने बताया, कि यह राजधानी प्लेस है। वर्तमान में हम सभी सामूहिक रूप में योग कर रहे हैं और भविष्य में भी यहां हम एक साथ रहेंगे और भविष्य में भी यहां ही राजधानी स्थापन करेंगे।

बीके बृजमोहन का स्वागत करते हुए बीके बहनें।

दस बुराईयों पर विजय का प्रतीक है दशहरा पर्व

भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रतिवर्ष दशहरा मनाया जाता है, जिसकी तैयारी एक माह पहले से शुरू होती है। यह यादगार पुरूषोत्तम श्रीराम के रावण पर विजय पाने का प्रतीक है। उन्होंने रावण को मारने के लिए शक्ति दुर्गा की अराधना की और दुर्गा के आह्वान द्वारा ही उन्होंने अंत में विजय पाई।

शक्ति रूपा दुर्गा को आठ हाथ तथा शेर पर सवार हुए महिषासुर का वध करते दिखाया गया है। इसके साथ श्री लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश तथा कार्तिकेय सभी अपने-अपने वाहनों पर उनके साथ रहते हैं।

दूसरी तरफ नवरात्री का वर्त तथा पाठ भी किया जाता है और छोटी-छोटी कुंवारी कन्याओं की पूजा भी की जाती है। कहावत है सौ ब्राह्मणों से कन्या।

फिर रावण, कुंभकर्ण तथा मेघनाद के बड़े भयंकर पुतले बनाये जाते हैं। जिसमें अनेक प्रकार की आतिश बाजी फिट की जाती है जिसे जलाने से जोरों की आवाज होती है। इन पुतलों को हरेक साल ऊंचा बनाते हैं और मजे की बात यह है कि हर वर्ष जलाने के बाद भी रावण आज तक जला नहीं है बल्कि और ही भयंकर रूप लेता जा रहा है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो रावण हमारे अंदर छिपी हुई बुराईयों का प्रतीक है जो पूरे समाज में चहूं ओर व्याप्त है। ये बुराईयां सारे विश्व में हर नर एवं नारी में पांच-पांच विकारों जैसे- काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार के रूप में भरी हुई है। जो जलाने पर भी नहीं जल रही है। यही असुर हमें जलाने का कार्य करते हैं। इन आसुरी वृति में हम एक को छोड़ते हैं तो दूसरी सिर उठा लेती है जैसे राम द्वारा रावण का एक सिर काटने दूसरा सिर निकल आता था।

आध्यात्मिक दृष्टि से अष्ट भुजाधारिणी दुर्गा अष्ट शक्तियों का प्रतीक है। ये अष्ट शक्तियांः-1- सामना करने की, 2- समाने की, 3-निर्णय करने की, 4-परखने की, 5- विस्तार से संकीर्ण करने की, 6- सहन करने की, 7-सहयोग करने की, 8-समेटने की शक्ति। ये शक्तियां पांच विकार रूपी रावण को जीतने के लिए अस्त्र-शस्त्र हैं। शेर पर सवारी अचल अडोल एवं निर्भयता का प्रतीक है। उसी तरह श्री लक्ष्मी का वाहन उल्लू भी व्यर्थ कुलक्षणों को त्याग कर श्रेष्ठ लक्षणों से भरपूर ज्ञान धन से सबको भरपूर करने का प्रतीक है।

सरस्वती का वाहन हंस भी विद्या रत्नों से भरने वाली सर्वमनोकामना पूर्ण करने वाली है। हंस के समान नीर क्षीर विवेक युक्त गुण एवं अवगुणों का विभेद बताने वाला कोई प्राणी नहीं है इसलिए वह विद्या के भंडार का प्रतीक है।

गणेश सवारी चूहा भी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रतीक है। चूहे की विशेषता वस्तु को काटकर इस प्रकार भाग निकलने की प्रवृति है जिससे उसे कोई पकड़ नहीं सकता। कार्तिकेय की सवारी मयूर भी पावन गृहस्थ आश्रम का प्रतीक है क्योंकि सारे विश्व में एक मयूर ही ऐसा पक्षी है जो निंविकार है अर्थात गृहस्थ की पावनता का प्रतीक है।

नवरात्री में जो कन्याओं का आह्वान करते हैं वह भी पावनता का ही प्रतीक है क्योंकि कन्याएं कौमार्यव्रती होती है।

ऐसे आज के इस पावन त्यौहार में सच्चा दशहरा आसुरी वृतियों पर विजय पाने का दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। क्योंकि आज सारे विश्व में ही माया रूपी रावण का राज्य छाया है। जब तक नर नारी द्वारा अपने अंदर छिपे हुए रावण को योगाग्नि से भस्म नहीं किया जाएगा तब तक आत्मा रूपी सीता को परमात्मा राम स्वीकार नहीं करेगें। अतः सर्व धर्म के अनुयायियों को पतित पावन राम का आदेश है कि हे आत्मा रूपी सीता, अब माया रूपी रावण को जलाने के लिए कामग्नि को तिलांजलि दें एवं योगाग्नि का आह्वान करें अन्यथा रावण भी अपनी सेनाओं के साथ अब तीसरे विश्व युद्ध की तैयारी के लिए समीप आ रहा है।

राज्यपाल को दिया ईश्वरीय संदेश

शिव आमंत्रण **मऊ।** बिहार के राज्यपाल फागू चौहान को उनके आवास पर ज्ञान चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करती ब्रह्माकुमारीज मऊ सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके बिमला, ज्ञान सरोवर माउण्ट आबू के बीके अमरजीत, बीके श्रीराम तथा बीके एवं बीके पूनम।

स्टैंड अप फॉर ह्यूमैनिटी मूवमेंट वॉशिंगटन में शुरू

सभी के संयुक्त प्रयास से आएगी विश्व में शांति

शिव आमंत्रण ➤ वॉशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डी.सी. में यूनिटी के लिए 'स्टैंड अप फॉर ह्यूमैनिटी' अभियान की शुरुआत की गई है, जिसमें सभी फैथ लीडर्स ने शामिल होकर सभी लोगों के लिए सम्मान और एकजुट होकर सामूहिक चेतना बढ़ाने का वैश्विक प्रयास किया। इस मौके पर कई धर्मों के अनुयाइयों समेत ब्रह्माकुमारीज़ ने भी प्रतिनिधित्व किया।

इस मौके पर वॉशिंगटन में ब्रह्माकुमारीज़ मेडिटेशन म्यूजियम की डायरेक्टर बीके जेना ने अपने विचारों पर ध्यान देने की बात कही, वहीं संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू से पहुंचे कार्यकारी

वॉशिंगटन। सभा को संबोधित करते बीके मृत्युंजय।

सचिव बीके मृत्युंजय ने इस आंदोलन के माध्यम से विश्व भर में शांति की सुनामी लाने का आह्वान किया।

मौके पर सीनियर मिनिस्टर केविन रोस, पीस एक्टीविस्ट मुसी हैलु, सिंगर पौल लुफ्टेनेगर, रेडियो होस्ट पाऊलेट पाइप समेत कई विशिष्ट मुख्य वक्ताओं की उपस्थिति रही। जिन्होंने पूरे समूह के साथ मिलकर लिंकन मेमोरियल के सामने कैंडल लाइटिंग के माध्यम से एकता की शक्ति को बढ़ावा देने का सन्देश दिया। इस मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

ब्राजील में भारत के केंद्रीय मंत्री को बांधा रक्षासूत्र

शिव आमंत्रण ➤ साओ पौलो। भारत के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ब्राजील के साओ पौलो के दौरे पर थे जिन्हें कल्चरल सेंटर में राजयोग शिक्षिका बीके कटिया ने रक्षासूत्र बांधा। इसके साथ ही सेवाकेंद्र का अवलोकन करने का निमंत्रण दिया। उन्हें ईश्वरीय संदेश और ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया गया। जावड़ेकर ब्रह्माकुमारीज़ की इस विशाल आध्यात्मिक शाखा को देखकर बेहद प्रसन्न हुए।

वर्जीनिया के गवर्नर ने को बांधा परमात्म रक्षासूत्र

शिव आमंत्रण ➤ वर्जीनिया। यूएसए के वर्जीनिया में मैंबर ऑफ 89 डिस्ट्रिक्ट ऑफ वर्जीनिया हाउस ऑफ डेलीगेट्स और गवर्नर राल्फ नोर्थम से मुख्यालय माउंट आबू से संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, भारत में बैंगलुरु के जयनगर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके नागरत्ना और बीके पवन पीटर ने मुलाकात की एवं राखी बांधी। सितम्बर मास में मुख्यालय में आयोजित होने वाले ग्लोबल समिट कम एक्सपो का भी निमंत्रण दिया।

आंतरिक शक्ति बढ़ाने के बताए टिप्स

शिव आमंत्रण ➤ सिलीकॉन वैली। कैलीफोर्निया के सिलीकॉन वैली में ब्रह्माकुमारीज़ के सेन्टर पर राखी के निमित्त स्टेट ऑफ कैलिफोर्निया के असेंब्ली मेम्बर कानसेन छू, कम्युनिटी लीडर अजय भूतोरिया और वैष्णव परिवार प्रेसिडेंट सुरेश गांधी ने शिरकत की। मौके पर हिल योर इनर सेल्फ विषय पर टॉक का आयोजन हुआ, जिसे मिल्पिटास में ब्रह्माकुमारीज़ की डायरेक्टर बीके कुसुम ने संबोधित किया।

ताइवान यात्रा / बीके आत्म प्रकाश ने युवाओं को बताए सफलता के मंत्र

युवा अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएं तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मिलेगी सफलता

शिव आमंत्रण ➤ सेंट पीटर्सवर्ग। मुख्यालय माउंट आबू से यूथ विंग के हेडक्वार्टर कोऑर्डिनेटर बीके आत्मप्रकाश हाल ही में ताइवान दौरे पर थे। उनके आगमन पर विभिन्न जगहों पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही राखी का त्यौहार भी मनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने मेडिटेशन सेशन्स लिए। साथ ही बौद्ध नन्स के साथ मुलाकात की और उन्हें ईश्वरीय सन्देश दिया।

इस दौरान अलग-अलग जगह पर आयोजित कार्यक्रम में बीके आत्म प्रकाश ने कहा कि युवाओं के अंदर असीम शारीरिक और मानसिक ऊर्जा होती है। यदि युवा अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाएं तो जीवन में प्रत्येक कार्य में सफलता मिलना निश्चित है।

ताईवान के भाई बहनों के साथ बीके आत्मप्रकाश

सार समाचार

लोगों को मूल्य शिक्षा देने के लिए मलेशिया सरकार ने ब्रह्माकुमारीज़ को सौंपी जिम्मेदारी, दिया अनुदान

शिव आमंत्रण ➤ कुआलालंपुर/मलेशिया। मलेशिया सरकार द्वारा भारतीय परिवर्तन इकाई (मित्रा) के तहत प्रधानमंत्री विभाग मलेशिया द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ को आरएम तीन लाख के वित्तीय अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है, जिसके तहत भारतीय समुदाय के लिए मूल्य आधारित शिक्षा और नेतृत्व प्रशिक्षण का संचालन किया जाएगा। इसमें सेलंगोर और नेगेरी सेम्बिलन राज्यों में 6 स्थान शामिल हैं। 11 से 17 वर्ष के युवा इसमें शामिल किए जाएंगे।

मलेशिया के मंत्रियों को दिया आध्यात्म का संदेश

शिव आमंत्रण ➤ मलेशिया। मिडिल ईस्ट और यूरोपियन देशों में ब्रह्माकुमारीज़ की डायरेक्टर बीके जयंती ने मलेशिया के कई मंत्रियों से मुलाकात की और आध्यात्मिक सन्देश दिया। इसमें यूनिटी और नेशनल इंटीग्रेशन मिनिस्टर वेथा मूर्थी, प्राइमरी इंडस्ट्रीज के मिनिस्टर टेरेसा कोक, ह्यूमन रिसोर्सेज के मिनिस्टर कुलसेगरण, क्लाइमेट चेंज के मिनिस्टर येओ बी यिन्स शामिल थे।

सेंटलुइस में मनाया परमात्म रक्षासूत्र कार्यक्रम

शिव आमंत्रण ➤ सेंटलुईस। मिसौरी के सेंट लुइस सेवाकेंद्र पर बीके सदस्यों ने रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया। न्यूयॉर्क के पीस विलेज रिट्रीट सेंटर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके कला ने सेंट लुइस, कोलंबिया, नैशविले और कंसास सिटी से आए बीके सदस्यों को पर्व का महत्व स्पष्ट किया। सेंटर इंचार्ज बीके प्रिया भी उपस्थित थीं।

कोलंबो में मनाया रक्षाबंधन पर्व, महत्व भी बताया

शिव आमंत्रण ➤ कोलंबो। मुख्यालय माउंट आबू से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शीलू के श्रीलंका पहुंचने पर विविध स्थानों पर रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

बीके शीलू ने देहीवाल, जाफना, त्रिनको, बटीकोला, कैंडी और मटाले (विंडो) में बीके सदस्यों के साथ वीआईपी भाई-बहनों को भी रक्षासूत्र बांधकर पर्व का आध्यात्मिक रहस्य समझाया। कैंडी में आयोजित कार्यक्रम का भारत के असिस्टेंट हाई कमिश्नर धीरेंद्र सिंग ने उद्घाटन किया।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018

Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

● प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● राज्य संपादकः ब्र.कु. रानी ● लेआउटः अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539